



जनयुद्ध की आहट

घबरायी मोदी सरकार का पलटवार

तड़ातड़ राहुल गांधी पर तीन एफआईआर

पुलिस के पास एफआईआर दर्ज करने के अलावा कोई काम नहीं रह गया है : अखिलेश यादव

जंतर मंतर पर छेड़ा गया आंदोलन या अब बेकाबू हो रहा है

जनयुद्ध में बदलता आंदोलन

» एफआईआर आंदोलन को रोक रही है या उसे और बड़ा बना रही

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क
नई दिल्ली। दिल्ली की सड़क पर पहले बैरिकेड आए फिर पुलिस आयी फिर हिरासत हुयी और अब एफआईआर पर एफआईआर दर्ज हो रही है। मौजूदा हालात में जंतर मंतर पर छेड़ा गया आंदोलन क्या अब बेकाबू हो रहा है। क्या आंदोलन जनयुद्ध में बदल रहा है क्योंकि सवाल यह है कि क्या हर एफआईआर आंदोलन को रोक रही है या उसे और बड़ा बना रही है।

कहानी अब सिर्फ राहुल गांधी की नहीं रह गई है एक तरफ राहुल गांधी हैं दूसरी तरफ प्रियंका गांधी हैं साथ में अखिलेश यादव और इंडिया ब्लॉक के दूसरे चेहरे हैं। महाराष्ट्र में राज ठाकरे और उद्धव ठाकरे एक मंच पर आ चुके हैं। सड़कों पर छात्र हैं युवा हैं और वह नया राजनीतिक गुस्सा भी है जिसे किसी एक पार्टी के झंडे में बांधना आसान नहीं है। और इसी बीच पक्की खबर आ चुकी है कि दिल्ली पुलिस ने कल के

सवालियों का जवाब नहीं तो सड़क ही बचती है

राहुल गांधी लगातार कह रहे हैं कि वह पीछे हटने वाले नहीं हैं। विपक्ष चुनाव आयोग से जवाब मांग रहा है। दूसरी तरफ चुनाव आयोग ने कहा है कि विपक्षी सांसदों की ओर से बैठक की प्रक्रिया निर्धारित प्रोटोकॉल के अनुरूप नहीं थी और उसने एक वरिष्ठ अधिकारी के जरिए ज्ञापन लेने का प्रस्ताव दिया था जिसे विपक्ष ने स्वीकार नहीं किया। यानी दोनों पक्षों के अपने-अपने तर्क हैं लेकिन जमीन पर तस्वीर एक ही है कि तनाव बढ़ रहा है। सभी को पता है कि आंदोलन जितना बड़ा होगा उसकी नैतिक जिम्मेदारी भी उतनी ही बड़ी होगी योकि जनआंदोलन की ताकत मीडि के साथ उसके मुद्दे में भी होती है और इस बार मुद्दा बड़ा है वार बड़ा और संघर्ष तो पूछिये मत दिल्ली की घटनाओं को अगर मुंबई की तस्वीर से जोड़कर देखें तो एक पैटर्न दिखाई देता है। विभिन्न दल चुनाव आयोग एसआईआर और वोटर लिस्ट के सवाल पर अलग अलग जगह आवाज उठा रहे हैं।

प्रदर्शन को लेकर तीन नयी एफआईआर दर्ज कर ली हैं। आरोप गंभीर हैं पुलिसकर्मियों से मारपीट सरकारी काम में बाधा धक्का-मुक्की और दुर्व्यवहार।

अखिलेश का राहुल को खुला साथ



इस लड़ाई का दूसरा बड़ा चेहरा अखिलेश यादव है समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव दिल्ली के प्रदर्शन में राहुल गांधी और दूसरे विपक्षी नेताओं के साथ शरीक हुए। अखिलेश यादव ने राहुल गांधी के ऊपर दर्ज हुई एफआईआर पर कहा है कि दिल्ली पुलिस के पास एफआईआर दर्ज करने के अलावा कोई काम नहीं है उनकी कही यह लाइन छोटी है लेकिन इसका राजनीतिक असर बड़ा है। योकि उर प्रदेश की राजनीति में अखिलेश यादव और राहुल गांधी की जोड़ी पहले ही विपक्षी राजनीति का महत्वपूर्ण हिस्सा बन चुकी है। अब अगर चुनावी प्रक्रिया और वोटर लिस्ट का सवाल दोनों नेता एक साथ सड़क पर उठते हैं तो इसका सीधा संदेश है कि मुद्दा कांग्रेस का नहीं विपक्ष का है और कलानी दिल्ली तक सीमित नहीं अगर सिर्फ दिल्ली की तस्वीर देखेंगे तो कलानी अधूरी रह जाएगी। महाराष्ट्र में राज ठाकरे और उद्धव ठाकरे लंबे समय बाद एक मंच पर आए।

घबराई सरकार ताबड़तोड़ एफआईआर

दिल्ली में कलानी तेजी से बदल रही है। प्रदर्शन धरना और हिरासत के बीच दिल्ली पुलिस ने तीन नई एफआईआर दर्ज की हैं। पुलिस के मुताबिक मामलों में पुलिसकर्मियों से मारपीट, सरकारी काम में बाधा, धक्का-मुक्की और दुर्व्यवहार से जुड़े आरोप लगाए गए हैं। एफआईआर में राहुल गांधी और

प्रियंका गांधी के नाम भी दर्ज किये गये हैं। यही से सवाल पैदा होता है कि या सरकार और विपक्ष के बीच टकराव अब उस स्तर तक पहुंच गया है जहां हर प्रदर्शन के बाद एक नया मुकदमा और हर मुकदमे के बाद एक नया प्रदर्शन दिखाई देगा। राहुल गांधी ने जिस तरह लगातार दो दिन सड़क पर

पिछले दो दिनों में दिल्ली में जो हुआ वह सामान्य राजनीतिक प्रदर्शन जैसा नहीं दिख रहा। राहुल गांधी और विपक्षी सांसद पहले चुनाव आयोग तक पहुंचने निकले। रोका गया। राहुल फिर धरना हुआ हिरासत हुयी फिर अगले दिन फिर प्रदर्शन हुआ फिर हिरासत हुयी और आज का दिन राहुल गांधी के लिए तीन नयी एफआईआर लेकर आया है। राहुल गांधी पहले ही कह चुके हैं कि एफआईआर उनके लिए मेडल है। उनका यह वक्तव्य साफ दर्शाता है कि राहुल गांधी पीछे हटने को तैयार नहीं है उनका कहना है कि लड़ाई संविधान और लोकतंत्र के लिए है। अखिलेश यादव दिल्ली पुलिस पर हमला बोलते हुए कह चुके हैं कि पुलिस के पास एफआईआर दर्ज करने के अलावा कोई काम नहीं रह गया है और महाराष्ट्र में तस्वीर और दिलवसप है राज ठाकरे और उद्धव ठाकरे जिनहोंने लंबे समय से अलग अलग राजनीतिक रास्ते पकड़े हुए हैं वह इस मुद्दे पर एक ही मंच पर साथ आ चुके हैं। दोनों दलों ने अपने पार्टी झंडों के बजाय तिरंगा सामने रखा है। यानी सवाल अब सिर्फ दिल्ली का नहीं है दिल्ली में राहुल लखनऊ में अखिलेश मुंबई में ठाकरे बंधु और सड़कों पर युवा बताने के लिए काफ़ी है कि अलग अलग दिशाओं में उठ रही ये आवाजें किसी बड़े राजनीतिक आंदोलन की जमीन तैयार कर रही हैं।

उत्तरकर नेतृत्व किया है उससे साफ है कि कांग्रेस इस मुद्दे को केवल संसद की बहस तक सीमित रखने के मुड में नहीं है। राहुल के साथ प्रियंका गांधी भी लगातार मैदान में दिखाई दे रही हैं। यानी गांधी परिवार ने इस मुद्दे पर अपनी राजनीतिक मौजूदगी को सड़क तक पहुंचा दिया है।

भाजपा ने विश्वास व जनाधार पूरी तरह खो दिया : अखिलेश यादव

» सपा प्रमुख बोले- पुनर्जागरण का नया सवेरा आ रहा, मिट जाएगा अंधेरा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख अध्यक्ष अखिलेश यादव का भाजपा पर करारा प्रहार जारी है। सपा अध्यक्ष ने भाजपा पर जनाधार और विश्वास खोने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि पार्टी में निर्णयों में किसी की सलाह नहीं ली जाती और कार्यकर्ता उपेक्षित महसूस कर रहे हैं। अखिलेश ने भाजपा सरकार पर पीडीए के उत्पीड़न का आरोप लगाते हुए सरकार की नीतियों पर भी निशाना साधा।

समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा कि भाजपा ने अपना विश्वास और जनाधार पूरी तरह खो दिया है। जो लोग सच में अपने देश से प्यार करते हैं, अब उनकी वैमनस्यपूर्ण धर्मांधता की काली रात गुजर गई है। विवेकशील पुनर्जागरण का एक नया सवेरा उनके मानसिक-अंधकार को मिटा कर नई चेतना का नया प्रकाश ला रहा है।

अखिलेश यादव ने जारी बयान में कहा कि अब तो भाजपा के लोग भी समझ गए हैं कि भाजपा किसी की सगी नहीं है। भाजपा में न सरकार का कोई मतलब है, न संगठन का। भाजपा एकाधिकारी मन और एकाकी मानसिकता से पूरी तरह ग्रसित



मौलाना सईदुर्रहमान आजमी नदवी के निधन पर जताया दुख

राजधानी लखनऊ में मौलाना सईदुर्रहमान आजमी नदवी के निधन पर सपा मुखिया अखिलेश यादव पहुंचे। उन्होंने कहा कि नदवी एक बहुत ही नेक इंसान थे। पूरा जीवन उन्होंने लोगों को पढ़ाने और उनका भविष्य बनाने में तथा परंपरा को आगे बढ़ाने में अपना पूरा जीवन दिया।

है। इसमें किसी और के लिए कोई स्थान नहीं है। सच तो यह है कि जहां स्थान ही नहीं मिलेगा, वहां मान-सम्मान कैसे मिलेगा। भाजपा में न तो किसी मामले में किसी की सलाह ली जाती है और न ही किसी निर्णय में किसी को शामिल किया जाता है। उन्होंने कहा कि अपने ही दल में

घोर उपेक्षित भाजपा के लोग अब एक-दूसरे से दुखी होकर कह रहे हैं कि भाजपा ने हमें बुरी तरह से निचोड़ कर बर्बाद कर दिया है। वे कह रहे हैं कि अब हमारी तुलना पूरी तरह रस निकाले जा चुके गन्ने की उस खोई से भी नहीं की जा सकती है, जिसे देखकर हाथी भी मुंह मोड़ लेता है। सपा

भाजपाराज में पीडीए की तकलीफें बढ़ीं

सपा अध्यक्ष और पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव ने कहा कि मुख्यमंत्री ने अपने चिरपरिचित धमकी भरे अंदाज में खुद स्वीकार कर लिया है कि उनके राज में पीडीए का उत्पीड़न रुकने वाला नहीं है। मतलब पीड़ित, दुखी व अपमानित और पिछड़े, दलित, अल्पसंख्यक, आधी आबादी व आदिवासी के साथ भाजपा सरकार का अत्याचार और अन्याय और बढ़ने वाला है। अखिलेश यादव ने कहा कि पीडीए को धमकी देती 5 सेकंड की यह स्वीकारोक्ति पीडीए का दमन करने वाले भाजपा नेताओं को पांच जन्मों तक सिर उठाकर आंख मिलाने लायक नहीं छोड़ेगी। मुख्यमंत्री को सोते-जागते हर समय पीडीए-ही-पीडीए दिखता है। हमारी सलाह तो यह है कि वो क्यों न 108 मनकों की माला बनाकर पीडीए का जाप करें। उन्होंने कहा कि जनता चढ़ावा चोरों की बात सुनने के मूढ़ में नहीं है।

अध्यक्ष ने कहा कि तमाम भाजपा के लोग ऐसे हैं, जो किसी भी घाट के नहीं रहे। हमें ऐसे बिन घाट के भाजपा वालों से बेहद सहानुभूति है।

बिना अनुमति मेरा फॉर्म-8 भरा गया : देवेंद्र यादव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली में चल रहे विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के बीच प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष देवेंद्र यादव के नाम पर उनकी जानकारी के बिना मतदाता सूची में सुधार के लिए फॉर्म-8 भरे जाने का मामला सामने आया है। यादव ने दावा किया कि उन्होंने न तो खुद फॉर्म-8 के लिए आवेदन किया और न ही किसी अन्य व्यक्ति को उनकी ओर से आवेदन करने के लिए अधिकृत किया था। इसके बावजूद उनके मोबाइल पर ईसीआईनेट से ओटीपी आने के बाद उन्हें आवेदन की जानकारी मिली।

यादव ने बुधवार को दिल्ली के मुख्य निर्वाचन अधिकारी और समयपुर बादली थाने के एसएचओ को शिकायत दी। उन्होंने मांग की कि आवेदन की पूरी जांच कर यह पता लगाया जाए कि उनके नाम पर फॉर्म-8 किसने और किस प्रक्रिया के तहत भरा। साथ ही दोषी पाए जाने वाले व्यक्ति के खिलाफ एफआईआर दर्ज कर कानूनी कार्रवाई की जाए। यादव के मुताबिक, उनके मोबाइल पर 010697 यूजर आईडी के लिए ओटीपी भेजे जाने का संदेश आया। इसके बाद उन्हें पता चला कि उनके नाम से मतदाता सूची में सुधार का आवेदन किया गया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि उन्होंने किसी को भी ऐसा आवेदन करने की अनुमति नहीं दी थी। कांग्रेस नेता ने कहा कि वह पूर्व पार्षद और पूर्व विधायक रह चुके हैं तथा वर्तमान में प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष हैं। ऐसे में यदि उनकी जानकारी के बिना उनके नाम पर मतदाता सूची में सुधार का आवेदन किया जा सकता है तो यह चुनावी प्रक्रिया की पारदर्शिता और आम मतदाताओं की सुरक्षा को लेकर गंभीर सवाल खड़े करता है। उन्होंने पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कर जिम्मेदार व्यक्ति की पहचान और उसके खिलाफ कार्रवाई की मांग की है।

एसआईआर के नाम पर करोड़ों लोगों को उनके मताधिकार से वंचित करने का षड्यंत्र : आराधना यूपी कांग्रेस अध्यक्ष बोलीं- संविधान पर प्रहार, वोट चोर सरकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। उत्तर प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष आराधना मिश्रा मोना ने बयान जारी कर कहा है कि भाजपा ने प्रदेश में लोकसभा चुनाव के दौरान संविधान बदलने के लिए 400 पार का नारा दिया था। लेकिन, संविधान रक्षक नागरिकों ने प्रदेश में भाजपा को आधा कर दिया। उन्होंने कहा कि भाजपा की सत्ता को बैसाखियों पर ला दिया। इसके बाद भाजपा ने संविधान पर प्रहार का दूसरा रास्ता निकाला और एसआईआर के नाम पर देश के करोड़ों लोगों को उनके मताधिकार से वंचित करने का षड्यंत्र रचा गया।

प्रदेश अध्यक्ष ने कहा कि राहुल गांधी एक साल से अधिक से इस असंवैधानिक



प्रक्रिया के खिलाफ लगातार आवाज उठा रहे हैं। उन्होंने चार प्रमाण रखते हुए कहा कि वोट चोरी की दाल में कुछ काला नहीं,

बल्कि पूरी दाल ही काली है। इनके बीच संवैधानिक संस्था और सर्वोच्च न्यायालय की टिप्पणियां चुनाव आयोग और उनके प्रमुख ज्ञानेश कुमार द्वारा किए जा रहे कथित अवैधानिक कामों पर सवाल खड़ी करती हैं। उन्होंने कहा कि जिस उत्तर प्रदेश ने भाजपा को सबक सिखाया, उसी उत्तर प्रदेश के मतदाताओं को सबसे ज्यादा हटाय़ा गया।

हम मुख्यमंत्री और वाराणसी से सांसद प्रधानमंत्री से पूछना चाहते हैं कि जब मतदाता सूची में सबसे ज्यादा नाम उत्तर प्रदेश से ही काटे गए तो आपने आपत्ति लेना तो दूर, मतदाताओं से छिने गए अधिकारों को ही सही ठहराने का काम क्यों किया।

हरियाणा में किसानों की मुश्किलें बढ़ीं : अभय

» इनेलो अध्यक्ष बोले- एमएसपी पर खरीद का दावा खोखला, सीएम से मंडियों का दौरा करने की मांग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। इनेलो के राष्ट्रीय अध्यक्ष अभय सिंह चौटाला ने प्रदेश की मंडियों में धान की धीमी खरीद और उठान में देरी को लेकर कहा कि भाजपा सरकार का किसानों की पूरी फसल न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) पर खरीदने का दावा सिर्फ दिखावा है। एक तरफ धान की धीमी खरीद व दूसरी तरफ खाद की कमी से किसानों की मुश्किलें बढ़ गई हैं।

चौटाला ने सीएम नायब सिंह सैनी से मंडियों का दौरा कर वास्तविक स्थिति देखने, धान की समयबद्ध खरीद और उठान सुनिश्चित कराने की मांग की। चंडीगढ़ में जारी बयान में चौटाला ने कहा कि इनेलो का प्रतिनिधिमंडल धान-बाजरा खरीद और खाद



की समस्या को लेकर राज्यपाल को ज्ञापन देगा। प्रदेश के 249 खरीद केंद्रों पर करीब 8.92 लाख मीट्रिक टन धान पहुंच चुका है। इसके बावजूद खरीद की गति धीमी है। नमी, राइस मिलर्स की कमी और पिछले सीजन के धान का उठान लंबित होने से मंडियों में जगह की समस्या बनी हुई है। कई जगह ट्रैक्टर-ट्रॉलियों की कतारें लगी हैं। देरी का खर्च भी किसानों को ही उठाना पड़ रहा है। रबी सीजन की बुवाई के समय डीएपी और यूरिया की कमी से भी किसान परेशान हैं। खाद की कमी और कालाबाजारी पर सरकार को तुरंत कार्रवाई करनी चाहिए।

महाकाल से अयोध्या तक दिग्विजय करेंगे पदयात्रा

» बोले- यात्रा में ईवीएम, संघ और चुनावी व्यवस्था पर भी उठाएंगे सवाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह दशहरा से उज्जैन के महाकाल मंदिर से अयोध्या तक करीब 1800 किलोमीटर की 'सत्य, सनातन, स्वाभिमान यात्रा' निकालेंगे। यात्रा मध्यप्रदेश और उत्तरप्रदेश से होकर गुजरेगी। दिग्विजय ने इसे गैर-राजनीतिक यात्रा बताया है, लेकिन इसके जरिए उन्होंने सनातन, राम मंदिर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, नियुक्तियों, मतदाता

मेरा सनातन गांधी का, संघ की विचारधारा से कभी सहमति नहीं

दिग्विजय ने कहा कि वे गांधीवादी विचारधारा में विश्वास करते हैं और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विचारधारा से उनका कभी मेल नहीं रहा। उन्होंने कहा कि महात्मा गांधी सबसे बड़े सनातनी थे। सनातन धर्म सबसे पुराना है, लेकिन बाद में इसे हिंदू नाम से पुकारा जाने लगा। उन्होंने कहा कि उन्हें हिंदू विरोधी कहा जाता है, जबकि हिंदू शब्द फारसी भाषा से आया है। उनका कहना था कि वे सत्य और अहिंसा में विश्वास करते हैं और धर्म का राजनीतिक इस्तेमाल करने के विरोधी हैं।

सूची, चुनाव आयोग और इलेक्ट्रॉनिक मतदान मशीनों से जुड़े कई सवाल उठाने का ऐलान किया है।

दिग्विजय ने कहा कि यात्रा का

उद्देश्य अधर्म पर धर्म, असत्य पर सत्य और अन्याय पर न्याय की जीत का संदेश देना है। वे रोज करीब 15 किलोमीटर पैदल चलेंगे। यात्रा का करीब आधा हिस्सा मध्यप्रदेश और आधा उत्तरप्रदेश में होगा।

उत्तर प्रदेश में उनकी पार्टी की सरकार नहीं है, इसलिए वहां भी लोगों के बीच जाकर यात्रा के उद्देश्य बताए जाएंगे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर हमला करते हुए दिग्विजय ने कहा कि आज महत्वपूर्ण पदों पर नियुक्तियों में संघ से जुड़े लोगों के प्रभाव को लेकर सवाल उठ रहे हैं। उन्होंने तंज किया कि जहां पूछो वहां संघ है, क्या संघ का आदमी खुदा हो गया? उन्होंने विश्वविद्यालयों में कुलपति, उपकुलपति और प्रोफेसरों की नियुक्तियों से लेकर लोक सेवा आयोग तक में संघ से जुड़े लोगों की भूमिका के आरोप लगाए। दिग्विजय ने कहा कि वे वर्ष 1972 से संघ की विचारधारा से जुड़े लोगों की राजनीति का सामना करते आ रहे हैं।



बामुलाहिजा

कार्टून : हसन जैदी

तमिलनाडु में विजय का कामराज दांव !

डीएमके को सीधी चुनौती, दक्षिण में नाडर समुदाय पर नजर

» दे रहा है द्रविड़ राजनीति को तनाव
» भाजपा के समर्थकों को दिख रहा अवसर

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। दक्षिण की सियासी हलचल आजकल पूरे देश में फैली है। कभी सीएम विजय के फैसले से डीएमके आग बबूला हो रही है तो कभी भाजपा लाभ का सपना देख रही है। वहीं कभी डीएमके निशाने पर कांग्रेस आती रहती है। बता दें द्रविड़ मुनेत्र कषगम द्वारा शुरू की गई इस प्लेगशिप योजना के केंद्र में नाडर समुदाय और शिक्षा सुधारों के आइकन कामराज को लाकर, विजय द्रविड़ राजनीति के स्थापित गढ़ पर सीधा प्रहार कर रहे हैं।

इसके साथ ही वे दक्षिणी तमिलनाडु में मजबूत चुनावी प्रभाव रखने वाले नाडर समुदाय के बीच अपनी पैठ बना रहे हैं। तमिलनाडु की राजनीति में बड़े उलटफेर के संकेत मिल रहे हैं। अभिनेता से राजनेता बने और राजनीति में आने के महज दो साल के भीतर सत्ता में पहुंचे मुख्यमंत्री सी. जोसेफ विजय ने एक बड़ा राजनीतिक दांव खेला है। उनकी सरकार द्वारा राज्य की महत्वपूर्ण नाशता योजना का नाम बदलकर पूर्व मुख्यमंत्री व कांग्रेस के दिग्गज नेता के. कामराज के नाम पर रखने का फैसला सिर्फ एक प्रशासनिक रीब्रांडिंग नहीं है, बल्कि इसके पीछे एक गहरी और सोची-समझी रणनीति छिपी है।



मुख्यमंत्री ब्रेकफास्ट स्कीम का नाम बदलकर पेरुथलैवर कामराज ब्रेकफास्ट स्कीम करने का आदेश

22 सितंबर को, सीएम विजय के नेतृत्व वाली तमिलनाडु सरकार ने मुख्यमंत्री ब्रेकफास्ट स्कीम का नाम बदलकर पेरुथलैवर कामराज ब्रेकफास्ट स्कीम करने का आदेश जारी किया। इस प्रोग्राम को पिछली छत्तरी सरकार (एम.के. स्टालिन के नेतृत्व में) ने

सितंबर 2022 में सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में कक्षा 1 से 5 तक के छात्रों के लिए शुरू किया था। अभिनेता से राजनेता बने विजय की पार्टी तमिलनाडु वेद्री कषगम (टीवीके) के नेतृत्व वाली सरकार के सत्ता में आने के बाद, 15 जुलाई को

कामराज की जयंती पर इस योजना का विस्तार कक्षा 6 से 8 तक के छात्रों के लिए किया गया। इसके बाद योजना के साथ कामराज का नाम जोड़ने का फैसला, पहले से चल रही कल्याणकारी योजना में एक राजनीतिक पहलू भी जोड़ता है।

1956 में, कामराज ने मद्रास राज्य में स्कूल मील प्रोग्राम (मिड-डे मील जैसी योजना) का पूरे राज्य में विस्तार करने की पहल की थी, जिसके तहत गरीब प्राइमरी स्कूल के बच्चों को दोपहर का मुफ्त भोजन दिया जाता था।

राजनीति के स्थापित गढ़ पर सीधा प्रहार

द्रविड़ मुनेत्र कषगम (डीएमके) द्वारा शुरू की गई इस प्लेगशिप योजना के केंद्र में नाडर समुदाय और शिक्षा सुधारों के आइकन कामराज को लाकर, विजय द्रविड़ राजनीति के स्थापित गढ़ पर सीधा प्रहार कर रहे हैं। इसके साथ ही वे दक्षिणी तमिलनाडु में मजबूत चुनावी प्रभाव रखने वाले नाडर समुदाय के बीच अपनी पैठ बना रहे हैं।

भाजपा की भी नजर

इन घटनाक्रमों पर नजर रखने वाले भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) समर्थकों के लिए, यह कदम पार्टी को कामराज को सिर्फ एक तमिल राजनीतिक आइकन से बदलकर एक बड़े ओबीसी प्रतीक के तौर पर पेश करने और 2029 के लोकसभा चुनाव से पहले उनके इर्द-गिर्द एक गठबंधन बनाने का मौका भी देता है। ओबीसी के एक ऐसे ही समूह ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से केंद्र सरकार की किसी योजना का नाम के. कामराज के नाम पर रखने की अपील भी की है।

विजय डीएमके को चिढ़ाने और साथ ही हिंदू नाडरों को लुभाने की कोशिश कर रहे हैं : दुरईसामी

टीम पीएम मोदीजी फॉर 2029 का नेतृत्व करने वाले रवींद्रन दुरईसामी के लिए, विजय का कामराज को चुनने का फैसला कोई इतेफाक नहीं, बल्कि सोच-समझकर लिया गया कदम है। अंबा शंकर कमीशन (1982-1985) के अनुसार, नादर तमिलनाडु में दूसरी सबसे बड़ी ओबीसी कम्युनिटी है। आज लगभग 40 प्रतिशत नादर ईसाई हैं। यह कम्युनिटी सीएम विजय की ओर आकर्षित है, जो खुद एक ईसाई हैं।

अब अपनी ब्रेकफास्ट स्कीम का नाम कामराज- जो नादर कम्युनिटी के नेता और तमिलनाडु के पूर्व मुख्यमंत्री थे- के नाम पर रखकर, विजय डीएमके को चिढ़ाने और साथ ही हिंदू नादरों को लुभाने की कोशिश कर रहे हैं। रवींद्रन दुरईसामी टीम पीएम मोदीजी फॉर 2029 के कन्वीनर हैं,



और सलाह देने का काम करती है। दुरईसामी ने बताया कि उनकी टीम पीएम मोदीजी फॉर पीएम 2029 ने

पीएम मोदी से कर्नाटक में जनता दल (सेक्युलर) के साथ गठबंधन करने और 2024 का लोकसभा चुनाव मिलकर लड़ने का आग्रह किया था। उनका तर्क था कि इस तरह का गठबंधन कांग्रेस के खिलाफ भाजपा की चुनौती को मजबूत कर सकता है। आखिरकार, भाजपा व जेडीएस ने 2024 के लोकसभा चुनाव के लिए चुनाव-पूर्व गठबंधन किया, जिसमें जेडीएस ने कर्नाटक में तीन सीटों पर चुनाव लड़ा।

विजय कामराज का इस्तेमाल राजनीतिक संदेश के तौर पर

सीएम विजय कामराज का इस्तेमाल राजनीतिक संदेश के तौर पर कर रहे हैं। कामराज का राजनीतिक महत्व सिर्फ तमिलनाडु में कांग्रेस का नेतृत्व करने वाले मुख्यमंत्री के तौर पर उनके रिकॉर्ड से कहीं ज्यादा है। वे नादर कम्युनिटी और द्रविड़ियन पार्टियों से अलग राजनीतिक परंपरा से गहराई से जुड़े रहे हैं, द्रविड़ियन पार्टियों का दशकों से तमिलनाडु पर दबदबा रहा है। कामराज की राजनीतिक विरासत कांग्रेस, ग्रामीण विकास, शिक्षा और कल्याण के इर्द-गिर्द बनी थी। राज्य में उनकी छवि का एक खास राजनीतिक फायदा भी है। द्रविड़ियन आंदोलन की विचारधारा वाली शब्दावली को सीधे अपनाए बिना भी उनका जिक्र किया जा सकता है। इससे वह विजय के लिए खास तौर पर अहम हो जाते हैं, जो पारंपरिक डीएमके - एआईडीएमके ढांचे से हटकर TVK की राजनीतिक पहचान बनाने की कोशिश कर रहे हैं। इस ढांचे पर पूरी तरह से द्रविड़ राजनीति का दबदबा रहा है।

पूरी राजनीति द्रविड़ बनाम द्रविड़-विरोधी के इर्द-गिर्द

विजय द्रविड़-विरोधी एजेंडे पर काम कर रहे हैं। तमिलनाडु की राजनीति में, जब कामराज मुख्यमंत्री थे और करुणानिधि व एमजीआर ने डीएमके शुरू की थी, तब पूरी राजनीति द्रविड़ बनाम द्रविड़-विरोधी के इर्द-गिर्द घूमती थी। DMK द्रविड़ राजनीति में अपना दबदबा बनाने में पूरी तरह सफल रही और उसने कामराज को हारिए पर धकेल दिया। अब विजय DMK के खिलाफ वही दांव खेलने की कोशिश कर रहे हैं। यह तमिलनाडु के मुख्यमंत्री का एक बड़ा राजनीतिक दांव है, जो राजनीति में आने के दो साल के भीतर ही सत्ता में आ गए थे। लंबे समय से तमिलनाडु

में द्रविड़ विचारधारा की प्रमुख राजनीतिक ताकत रही है। विजय के पास कांग्रेस के दौर के कामराज जैसा संगठनात्मक इतिहास या वैचारिक विरासत नहीं है, लेकिन पूर्व मुख्यमंत्री का जिक्र करने से उन्हें राज्य के स्थापित राजनीतिक ढांचे के सामने खुद को पेश करने का एक तरीका मिल जाता है। इससे विजय को द्रविड़ दिग्गजों का मुकाबला करने में मदद मिलती है; वे यह बता सकते हैं कि तमिलनाडु का राजनीतिक इतिहास द्रविड़ आंदोलन से शुरू नहीं हुआ था और कल्याणकारी राजनीति को एक वैकल्पिक विरासत से भी जोड़ा जा सकता है।

राज्य में नाडर समुदाय का गणित अहम है?

विजय के नाडर समुदाय से जुड़े गणित का एक खास पहलू दक्षिणी तमिलनाडु से जुड़ा है। TVK का आधार मुख्य रूप से चेन्नई और राज्य के मध्य हिस्सों में है। राजनीतिक जानकारों का अनुमान है कि कई दक्षिणी जिलों - खासकर कन्याकुमारी, तिरुनेलवेली, थूथुकुडी, तेनकासी और विरुधुनगर - में नाडर समुदाय की आबादी मतदाताओं का एक

बड़ा हिस्सा है। हर चुनाव क्षेत्र में इनका प्रभाव अलग-अलग होता है, और कुछ इलाकों में इनकी आबादी बहुत ज्यादा है। दुरईसामी का कहना है कि राज्य भर में इस समुदाय का चुनावी वजन लगभग 6 प्रतिशत से 8 प्रतिशत है, साथ ही वे दक्षिणी तमिलनाडु में इनकी ज्यादा आबादी पर भी जोर देते हैं। विजय के लिए, यह समुदाय एक दिलचस्प राजनीतिक

संभावना पेश करता है। वे खुद ईसाई हैं, और ईसाई नाडर इस समुदाय का एक अहम हिस्सा हैं। साथ ही, कामराज हिंदू नाडरों के साथ एक पुल का काम करते हैं; हो सकता है कि वे धर्म के आधार पर विजय से न जुड़ें, लेकिन उनके कल्याणकारी एजेंडे का समर्थन जरूर करें। यहीं पर स्कूल-मीट (मिड-डे मील) योजना का नाम बदलना, महज एक

श्रद्धांजलि देने से कहीं ज्यादा राजनीतिक रूप से दिलचस्प हो जाता है। मोदी के समर्थक विजय से खतरा और एकजुट करने का मौका देख रहे हैं। दुरईसामी का संगठन, टीम पीएम मोदीजी फॉर 2029, कामराज को एक राष्ट्रीय नेता के तौर पर पेश कर रहा है, जो भाजपा को एक बड़ा सामाजिक गठबंधन बनाने में मदद कर सकते हैं।



Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_SanjayS

जिद... सच की

दवाओं की कीमतों पर कब कसेगा शिकंजा

66

बीमारी इंसान को केवल शारीरिक रूप से नहीं तोड़ती, बल्कि इलाज का खर्च कई परिवारों की आर्थिक कमर भी तोड़ देता है। ऐसे समय में जब कोई परिवार कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से जूझ रहा हो, तब जीवन बचाने वाली दवा की कीमत में दस गुना तक का अंतर सामने आए तो सवाल सिर्फ महंगी दवा का नहीं रह जाता, बल्कि पूरी व्यवस्था की जवाबदेही का बन जाता है।

अभी यूपी की राजधानी लखनऊ में एफएसडीए की छापे मे अस्पतालों के फार्मसी में बहुत बड़ा कांड पकड़ा गया है। इनम दवाइयों को एमआरपी से दस से ले कर 70 गुना अधिक के दाम में बेचा जा रहा था। ये जनता के साथ अत्याचार की पराकाष्ठा है। देश की सरकार दावा करती है स्वास्थ्य सेवाएं चुस्त दुरुस्त हैं। पर आय दिन अखबारों में अस्पतालों व डॉक्टरों की ज्यादाती की खबरें आती रहती है। कभी कभी गलत इलाज कर दिया जाता है और भारी भरकम बिल भी ले लिया जाता है। बीमारी इंसान को केवल शारीरिक रूप से नहीं तोड़ती, बल्कि इलाज का खर्च कई परिवारों की आर्थिक कमर भी तोड़ देता है। ऐसे समय में जब कोई परिवार कैंसर जैसी गंभीर बीमारी से जूझ रहा हो, तब जीवन बचाने वाली दवा की कीमत में दस गुना तक का अंतर सामने आए तो सवाल सिर्फ महंगी दवा का नहीं रह जाता, बल्कि पूरी व्यवस्था की जवाबदेही का बन जाता है। हम आपको बता दें कि सर्वोच्च न्यायालय ने दवाओं की कीमतों में इसी भयावह अंतर पर गंभीर चिंता जताते हुए ऐसे सवाल उठाए हैं, जिनका जवाब सरकार, दवा कंपनियों, नियामक संस्थाओं और अस्पतालों, सभी को देना होगा।

मामला उस समय बेहद गंभीर हो गया जब अदालत के सामने बताया गया कि कैंसर की एक आवश्यक दवा खुदरा विक्रेताओं को करीब 2,700 रुपये में उपलब्ध कराई जाती है, लेकिन उसी दवा पर 27,000 रुपये का अधिकतम खुदरा मूल्य अंकित है। यानी खुदरा मूल्य उस कीमत का लगभग दस गुना है जिस पर दवा खुदरा विक्रेता तक पहुंच रही है। न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की पीठ ने इस अंतर पर कड़ा सवाल उठाते हुए पूछा कि आखिर किसी मरीज से इतनी बड़ी रकम क्यों वसूली जानी चाहिए और जिन अधिकारियों को ऐसी व्यवस्था पर निगरानी रखनी चाहिए, वे चुप क्यों हैं। देखा जाये तो यहां से सवालों की पूरी श्रृंखला शुरू होती है। अगर दवा की वास्तविक आपूर्ति कीमत और मरीज से वसूले जाने वाले मूल्य के बीच इतना बड़ा अंतर हो सकता है, तो मूल्य-निर्धारण की निगरानी कौन कर रहा है? अगर नियामक संस्थाएं मौजूद हैं, तो ऐसी कीमतें बाजार में पहुंचती कैसे हैं? और अगर नियम हैं, तो उनका पालन कराने की जिम्मेदारी किसकी है? सर्वोच्च न्यायालय ने इस अंतर को लेकर बेहद कठोर भाषा का इस्तेमाल किया और इसे मरीजों के साथ 'दिनदहाड़े डकैती' तथा 'वसूली' जैसे शब्दों से जोड़ा। अदालत ने यह भी सवाल उठाया कि जब जीवनरक्षक दवा की कीमत इतनी अधिक हो जाती है तो मजबूर मरीज क्या करे? अदालत के समक्ष यह बात भी रखी गई कि इलाज के लिए परिवारों को मकान और गहने तक बेचने पड़ते हैं।

Sanjay

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

ईसीआई विवाद मताधिकार के अधिकार के साथ न्याय नहीं करता

विवेक काटजू

एक राष्ट्रीय दैनिक ने 23 सितंबर को एक खबर प्रकाशित की थी, जिसमें बताया गया था कि निर्वाचन आयुक्तों सुखबीर सिंह संधू और विवेक जोशी ने भारतीय निर्वाचन आयोग (ईसीआई) द्वारा लिए गए कुछ महत्वपूर्ण फैसलों पर आपत्ति जताई थी। उनकी शिकायत थी कि या तो इन फैसलों से पहले उनसे सलाह नहीं ली गई या फिर उनके विचारों के विपरीत निर्णय किए गए। रिपोर्ट में कहा गया था कि दोनों निर्वाचन आयुक्तों ने 10 महीनों में 14 मौकों पर अपनी आपत्तियां दर्ज कराईं, लेकिन उनकी चिंताओं का समाधान नहीं किया गया। उनका कहना था कि कुछ महत्वपूर्ण मामलों में ईसीआई अपने ही कानून के खिलाफ जा रहा है। कानून में प्रावधान है कि फैसले सर्वसम्मति से लिए जाने चाहिए और यदि ऐसा संभव न हो तो बहुमत का मत प्रभावी होगा। मुख्य निर्वाचन आयुक्त (सीईसी) केवल समान लोगों में प्रथम हैं।

वह ईसीआई की शक्तियों को अपने हाथ में नहीं ले सकते। संधू और जोशी इस बात से नाराज थे कि सीईसी ज्ञानेश कुमार ने कथित तौर पर उनकी अनदेखी की। इसलिए, विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण वैधानिक मुद्दों पर आंतरिक रूप से अलग रुख रखने के बावजूद उन्होंने सार्वजनिक रूप से इस प्रक्रिया का समर्थन किया। इस बात का कोई प्रमाण नहीं है कि जब जून 2025 में एसआईआर का फैसला लिया गया था, तब उन्होंने इस बात पर विचार किया हो कि बिहार और पश्चिम बंगाल में चुनाव होने से पहले सभी मतदाताओं तक प्रभावी और पर्याप्त रूप से पहुंचने के लिए पर्याप्त समय था या नहीं। उन्होंने एसआईआर की उस कार्यप्रणाली पर भी आपत्ति नहीं जताई, जिसने बड़ी संख्या में वैध मतदाताओं पर भारी दबाव डाल दिया। इसलिए 24 सितंबर को राहुल गांधी द्वारा अपनी प्रेस वार्ता में संधू और

जोशी की आंतरिक आपत्तियों की सराहना करना जल्दबाजी थी। उन्होंने इस बात को नजरअंदाज किया कि संधू और जोशी की नियुक्ति भी उसी प्रक्रिया के तहत हुई थी, जिसके तहत कुमार की नियुक्ति हुई थी और उनकी नियुक्ति के पीछे भी वही विचार लागू किए गए होंगे।

यह कल्पना करना कठिन था कि पद संभालने के बाद दोनों वास्तव में और सार्वजनिक रूप से कोई थॉमस बेकेट जैसा विद्रोही रुख अपनाएं। कुमार के समान ही उनकी सोच होने की बात तब स्पष्ट हुई, जब 26 सितंबर को पूर्ण निर्वाचन आयोग की बैठक के बाद वे उनके साथ मीडिया वार्ता में

यह देखना बाकी है कि इस खुलासे के सीईसी और सरकार पर क्या अनपेक्षित प्रभाव पड़ते हैं। दूसरी ओर, सत्तारूढ़ पक्ष कुमार के समर्थन में और अधिक मजबूती से खड़ा होगा, क्योंकि 'इंडिया' गठबंधन ने उन्हें अपनी 'वोट चोरी' मुहिम के तहत निशाना बनाने का फैसला किया है। कुमार कुछ सुधारात्मक कदम भी उठा रहे हैं। इसका उदाहरण उन राज्यों में मूल फॉर्म-6 को बहाल करना है, जहां एसआईआर की प्रक्रिया पूरी हो चुकी है। हालांकि, एसआईआर के दौरान फॉर्म-6 के इस्तेमाल के तरीके पर सुप्रीम कोर्ट को विशेष रूप से अपना रुख स्पष्ट करना होगा। हाल ही में सुप्रीम कोर्ट के एक न्यायाधीश ने कहा था कि



शामिल हुए। बैठक के नोट से पता चलता है कि कुमार ने अपना कठोर रुख छोड़ते हुए इस बात पर सहमति जताई कि वह कानून के अनुसार दोनों निर्वाचन आयुक्तों के साथ लेकर चलेंगे। क्या किसी अदृश्य हाथ ने उन्हें उचित सलाह दी थी? इसी तरह, क्या उसी हाथ ने संधू और जोशी को यह सलाह दी कि उन्हें सार्वजनिक रूप से निर्वाचन आयोग को शर्मिंदा नहीं करना चाहिए? जाहिर तौर पर कोई समझौता हुआ। दोनों निर्वाचन आयुक्तों ने अप्रत्यक्ष रूप से फिर कहा कि एसआईआर ईसीआई का सर्वसम्मति फैसला था और एसआईआर की अवधि के लिए फॉर्म-6 में किए गए विवादास्पद अतिरिक्त प्रावधान भी वैध थे। अब जबकि सुप्रीम कोर्ट इस बात की जांच कर सकता है कि कुछ मामलों में कुमार ने अपने अधिकार क्षेत्र का अतिक्रमण तो नहीं किया, ऐसे में

ईसीआई को स्पष्ट रूप से स्वतंत्र होना चाहिए। यह तभी संभव है जब राजनीतिक वर्ग इस बात पर सहमत हो कि निर्वाचन आयुक्तों को पद छोड़ने के बाद राजनीति में प्रवेश की अनुमति नहीं दी जाएगी। दुर्भाग्य से, अतीत का अनुभव बताता है कि ऐसा करना मुश्किल हो सकता है।

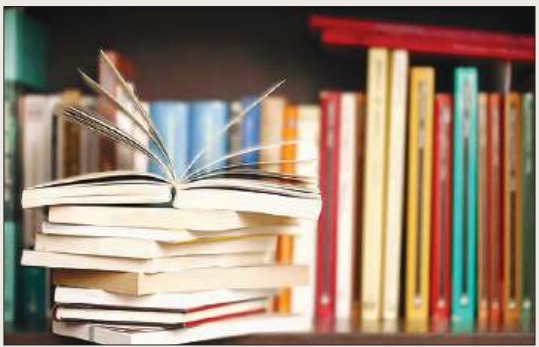
कांग्रेस ने न केवल एक ऐसे सीईसी की नियुक्ति की थी, जिन्हें व्यापक रूप से पार्टी के प्रति सहानुभूति रखने वाला माना जाता था, बल्कि पूर्व सीईसी एम.एस. गिल को राज्यसभा सदस्य और फिर मंत्री भी बनाया था। भले ही किसी कानून का उल्लंघन न हुआ हो, क्या यह उचित था? क्या चुनावी प्रक्रिया के अंपायरों को खिलाड़ी बना देना चाहिए? एसआईआर को संभालने के मामले में ईसीआई कई पहलुओं पर खरा नहीं उतरा है।

क्षमा शर्मा

अक्सर कहा जाता है कि इन दिनों लोगों की पढ़ने में दिलचस्पी नहीं रही। मोबाइल और सोशल मीडिया ने इसे और कम किया है। कुछ पहले तक किसी भी चीज पर फोकस दो मिनट कहा जाता था, अब वह चालीस सेकेंड भर का रह गया है। ऐसे में कोई मोटे-मोटे ग्रंथ क्यों पढ़ें, जबकि सोशल मीडिया पर देखने-पढ़ने को इतना कुछ है। बड़ी से बड़ी किताबों के दो मिनट में पढ़े जाने वाले सारांश या रील्स और वीडियोज मौजूद हैं। लगभग दो दशक पहले अखबारों में माना जाने लगा था कि युवा वर्ग अखबारों में छपे लंबे-लंबे लेख, कहानियां, संपादकीय आदि नहीं पढ़ना चाहता। उसकी भाग-दौड़ की जिंदगी में पढ़ने के लिए उसके पास समय नहीं है। इसलिए इनके आकार छोटे कर दिए गए। इसका कारण यह था कि बताया जा रहा था कि अपने देश में युवाओं की संख्या पैंसठ प्रतिशत है।

उन्हीं की जेब में पैसे हैं, इसलिए पोर्टेबिल बायर और पाठक वही हैं। इसलिए जैसा वे चाहते हैं, वैसा ही किया जाए। हालांकि, इस कारण से युवाओं ने पढ़ना शुरू किया था, यह महसूस नहीं हुआ। जबकि इसके विपरीत जमीनी हकीकत यह नजर आती रही है कि अखबारों, किताबों और पत्र-पत्रिकाओं को पढ़ने वाले बड़ी उम्र के लोग हैं। आज भी बुजुर्गों को बड़ी संख्या में अखबार और किताबें पढ़ते देखा जा सकता है, क्योंकि वे उन्हें विश्वसनीय मानते हैं। इसके अलावा, किताबें और अखबार पढ़ने से न आंखों पर जोर पड़ता है, न बिजली का अतिरिक्त बिल आता है। नेट चले न चले, इससे भी कोई फर्क नहीं पड़ता। इन दिनों तो किताबों को ऑनलाइन फोन, लैपटॉप आदि पर

दुनिया में फिर किताबों की ओर लौटने की मुहिम



आसानी से पढ़ा जा सकता है। ऐसे में पढ़ने की दिलचस्पी क्यों कम होती जा रही है, यह सोचने की बात है। जबकि शहर-दर-शहर बड़े-बड़े पुस्तक मेले भी लगते हैं। इनमें किताबों की बिक्री भी खूब होती है। बहुत से लोग कहते हैं कि दरअसल ज्यादा किताबें सरकारी खरीद में बिकती हैं। व्यक्तिगत और निजी बिक्री बहुत कम होती है। हाथ-हाथ में मोबाइल आने और स्क्रीन टाइम बढ़ने के कारण दुनिया भर में चिंता प्रकट की जा रही है। इस समय को किस तरह से कम किया जाए, इस पर बहुत से विद्वान माथापच्ची कर रहे हैं। एक समय ऐसा था, जब मान लिया गया था कि हमें जीवन से कागज और किताबों की विदाई करनी है। स्क्रीन में ही हमारा भविष्य छिपा है।

लेकिन अच्छे परिणाम न देखकर बहुत कुछ बदल भी रहा है। स्वीडन में लगभग पंद्रह साल पहले बिल्कुल छोटी, यानी प्राथमिक कक्षाओं में ही बच्चों को लैपटॉप दे दिए गए। उन्हें सारी पढ़ाई-लिखाई इन्हें पर करनी थी। कक्षा से किताबों और कॉपियों की विदाई हो गई। लेकिन पता चला कि इस कारण से बच्चों ने नया कुछ

नहीं सीखा। ध्यान केंद्रित करने में कमी आई। वे आपस में एक-दूसरे से मिलने-जुलने, खेलने में कम दिलचस्पी लेने लगे और बच्चे चिड़चिड़े हो गए। उनका गुस्सा बढ़ा। वे नया कुछ सीखने से बचने लगे।

बालपन में ही उन्हें गर्दन, कमर और रीढ़ की हड्डियों की समस्याओं ने घेर लिया। तब वहां की सरकार ने बाकायदा इसका अध्ययन कराया। इस अध्ययन के निष्कर्ष के आधार पर ही अब वहां के स्कूलों में कॉपी, किताबों की वापसी हो गई है। अन्य बहुत से देश भी इस बारे में सोच रहे हैं। हाल ही में सिंगापुर के बारे में भी पता चला कि वहां किताबें पढ़ने के लिए विशेष प्रोत्साहन योजना शुरू की गई है। सिंगापुर की सरकार पूरे विश्व में पहली सरकार है, जिसने इस तरह की योजना शुरू की है। इसके अनुसार आपको ऑनलाइन पंद्रह मिनट पढ़ना है। यदि कोई इस तरह के पचास सेशन पूरे कर लेगा, तो इनाम के तौर पर उसे सिंगापुर में चलने वाला एक डॉलर दिया जाएगा। लेकिन इसमें एक शर्त यह भी है कि एक दिन में आप जितना भी पढ़ेंगे, उसे एक ही सेशन माना जाएगा। इसलिए पचास

दिन तक पढ़ने पर ही एक डॉलर मिलेगा। सरकार को लग रहा है कि इस तरह से लोगों में पढ़ने की जो आदत छूट गई है, उसे वापस लाया जा सकेगा। बहुत से लोग इस योजना का स्वागत कर रहे हैं, लेकिन बहुत से कह रहे हैं कि पढ़ना आनंद के लिए होता है। यदि इसे भी पैसा कमाने का जरिया बना लिया जाएगा, तो आनंद ही खत्म हो जाएगा। ब्रिटेन की एक प्रोफेसर बारबरा सहाकियन ने अमेरिका के दस हजार बच्चों पर एक शोध किया। शोध के निष्कर्ष के तौर पर बारबरा ने बताया कि जो बच्चे छुटपन से ही शौक के लिए पढ़ने लगते हैं, बड़े होकर उन्हें दूसरों से बातचीत करने, जुड़ने और जीवन में आगे बढ़ने में बहुत सहायता मिली। उनका स्क्रीन टाइम भी कम हुआ। नौद भी अच्छी आई। इसका कारण यह है कि हम किसी की लिखी किताब पढ़ते हैं, तो हमें दूसरों के विचारों और जीवन को समझने में मदद मिलती है।

इसी तरह हम दूसरों के लिखे से सीखकर अपनी जिंदगी को भी बेहतर बनाने की सोचते हैं। अकेलापन भी कम महसूस होता है, क्योंकि किताबों को मनुष्य का सबसे बेहतर दोस्त बताया जाता है। यह भी लगता है कि पढ़कर हम बहुत कुछ जान सकते हैं। अच्छी बातें भी सीख सकते हैं। पढ़ने से हमारी ध्यान केंद्रित करने की क्षमता भी बढ़ती है। यही नहीं, पढ़ते वक्त हमारा ध्यान किसी कहानी, कविता, लेख आदि में रहता है, तो दुनिया की तमाम समस्याओं और अपनी परेशानियों से भी दूर हो जाते हैं। हमारा तनाव कम होता है, किसी विषय पर फोकस करने की क्षमता भी बढ़ती है। पढ़ने के लिए किसी आयु का भी बंधन नहीं है। बालपन से लेकर बुजुर्ग अवस्था तक, पढ़ना कभी भी शुरू किया जा सकता है।



ब्लोटिंग

कम करने के लिए आजमाएं ये उपाय

कई लोगों को सुबह उठते ही ब्लोटिंग की शिकायत होती है। कभी-कभी इसका कारण रात में ज्यादा खाना, देर से डिनर करना या पाचन से जुड़ी सामान्य समस्या हो सकती है। वहीं, कुछ लोगों में गैस, कब्ज, खाने की कुछ चीजों से संवेदनशीलता या खाने की आदतों के कारण भी पेट फूलने की परेशानी हो सकती है। ऐसे में तुरंत दवा लेने के बजाय अपनी रोजमर्रा की आदतों पर ध्यान देना भी मददगार हो सकता है। पानी पीने से लेकर खाने की मात्रा और सुबह की दिनचर्या में छोटे बदलाव तक, कुछ आसान उपाय ब्लोटिंग की समस्या को कम करने में मदद कर सकते हैं। सुबह की ब्लोटिंग कई वजहों से हो सकती है। रात में भारी खाना, बहुत जल्दी खाना, गैस बनाने वाले खाद्य पदार्थ, कब्ज और शरीर में पानी की कमी इसके कुछ सामान्य कारण हो सकते हैं। कुछ लोगों में दूध या अन्य खाद्य पदार्थों को पचाने में परेशानी होने पर भी पेट फूल सकता है।



गुनगुना पानी पिएं

सुबह उठने के बाद धीरे-धीरे एक गिलास गुनगुना पानी पी सकते हैं। इससे शरीर हाइड्रेट रहता है और पाचन तंत्र को सामान्य रूप से काम करने में मदद मिल सकती है। अगर आपको एसिडिटी की समस्या रहती है, तो बहुत गर्म पानी पीने से बचें। इसके अलावा अजवाइन का पानी गैस और अपच के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक पारंपरिक घरेलू उपाय है।

कब डॉक्टर से लें सलाह

कभी-कभार पेट फूलना आम हो सकता है, लेकिन अगर यह समस्या लगातार बनी रहती है या इसके साथ तेज पेट दर्द, लगातार उल्टी, पेट का बहुत ज्यादा फूलना, मल में खून, बुखार या बिना वजह वजन कम होना जैसे लक्षण दिखाई दें, तो इसे नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। ऐसी स्थिति में डॉक्टर से जांच कराना जरूरी है।

आपको अजवाइन से परेशानी होती है, पेट में जलन बढ़ती है या कोई मेडिकल कंडीशन है, तो इसे लेने से पहले विशेषज्ञ की सलाह लेना बेहतर है।

रात की ये आदतें भी हो सकती हैं जिम्मेदार

अगर रोज सुबह पेट फूलता है, तो सिर्फ सुबह के उपायों पर ध्यान देना काफी नहीं है। देर रात खाना, सोने से ठीक पहले बहुत ज्यादा भोजन करना, कार्बोनेटेड ड्रिंक्स पीना और ज्यादा नमक वाला खाना भी कुछ लोगों में अगले दिन ब्लोटिंग की वजह बन सकता है। इसलिए रात का खाना बहुत देर से खाने से बचें और अपनी डाइट में पर्याप्त फाइबर व पानी शामिल करें। हालांकि, फाइबर अचानक बहुत ज्यादा बढ़ाने से भी गैस और ब्लोटिंग हो सकती है, इसलिए इसे धीरे-धीरे बढ़ाना बेहतर है।

10-15 मिनट हल्की वॉक करें

पेट फूलने पर लंबे समय तक बिस्तर पर पड़े रहने के बजाय थोड़ी देर हल्का

पेट की हल्की मालिश करें

अगर पेट में गैस या भारीपन महसूस हो रहा है, तो पेट पर हल्के हाथों से गोलाकार तरीके से मालिश कर सकते हैं। मालिश करते समय पेट पर ज्यादा दबाव न डालें। अगर इससे दर्द बढ़े तो तुरंत रोक दें।

टहलना बेहतर विकल्प हो सकता है। हल्की शारीरिक गतिविधि आंतों की गति को बढ़ाने और गैस को बाहर निकलने में मदद कर सकती है। बहुत तेज एक्सरसाइज करने की जरूरत नहीं है। भोजन के बाद या दिन में किसी भी समय सिर्फ 10-15 मिनट की हल्की वॉक करना आपकी सेहत को जादुई रूप से बदल सकता है।



हंसना मना है

बाप: बेटा अगर ससुराल वाले स्कूटर दें तो कार मांगना, कूलर दें तो एसी मांगना, लड़का: पापा अगर वो लड़की दें तो उसकी मां को भी मांग लूं क्या?

टीचर ने गधे के सामने 1 दारु की और 1 पानी की बाटली रखी, गधा पानी पी गया। टीचर: तुमने इससे क्या सिखा? स्टूडेंट: जो दारु नहीं पिता वह गधा होता है!

एक आदमी मेडिकल शॉप पर जहर लेने गया। आदमी: एक जहर की बोतल देना दुकानदार: बिना पर्ची के जहर नहीं मिल सकता। आदमी ने शादी का कार्ड दिखाया... दुकानदार: बस कर पगले, रुलाएगा क्या? बड़ी बोतल दूं या छोटी?

पति- क्या तुम्हें पता है कि गाने में इतनी ताकत होती है कि पानी भी गरम हो जाता है, पत्नी- हां हां जरूर, क्यों नहीं जानती अब तुम यही सोच लो अगर तुम्हारा गाना सुन कर मेरा खून खौल सकता है, तो फिर पानी क्यों नहीं।

टीचर- कल होमवर्क नहीं किया तो मुर्गा बनाऊंगा। पप्पू - सर मुर्गा तो मैं नहीं खाता, आप चाहो तो मटर पनीर बना लेना, पप्पू का जवाब सुनकर मास्टर जी ने कल के बजाए उसे आज ही मुर्गा बना दिया।

कहानी

जब शेर जी उठा

बहुत समय पहले द्रोण नगरी में चार दोस्त रहा करते थे। उन चारों में से तीन ब्राह्मण कई तरह की विद्याओं में निपुण थे, जबकि चौथे के पास किसी तरह की विद्या नहीं, लेकिन वह बहुत बुद्धिमान था। चौथा दोस्त हमेशा अपनी बुद्धि का इस्तेमाल करके हर समस्या से बचने का रास्ता निकाल लेता था, जबकि अन्य दोस्त विद्यावान होते हुए भी समझदारी से काम नहीं लेते थे। एक दिन उन चारों दोस्तों ने मिलकर सोचा कि पैसा कमाने के लिए विदेश जाना चाहिए। इसी के चलते चारों विदेश यात्रा पर चल दिए। यात्रा के दौरान एक ब्राह्मण दोस्त ने कहा कि हम में से सिर्फ एक दोस्त के पास विद्या नहीं है। ऐसे दोस्त को हमारी विद्या के कारण मिलने वाला धन नहीं मिलना चाहिए। वो घर वापस जा सकता है। इस पर दूसरा दोस्त सहमत हो गया, लेकिन तीसरे दोस्त ने कहा कि ऐसा करना ठीक नहीं होगा। हम सभी बचपन से दोस्त हैं और अब यह फैसला लेना गलत होगा। हम जो कुछ भी कमाएंगे, उसे चार हिस्सों में बांट देंगे। इस बात पर सबने हामी भरी। यात्रा के दौरान जंगल से गुजरते हुए उन्हें एक मरा हुआ शेर दिखा। सभी ब्राह्मणों ने कहा कि हम अपनी विद्या के चमत्कार से इस शेर को ज़िंदा कर देंगे। इससे हमें बहुत यश और कीर्ति मिलेगी। तीनों ब्राह्मण दोस्त उसे ज़िंदा करने में लग गए, लेकिन चौथे बुद्धिमान दोस्त ने उन्हें ऐसा करने से मना किया। उसने कहा कि अगर तुम लोग इसे ज़िंदा कर दोगे, तो वह ज़िंदा होते ही हम सबको खा जाएगा। चौथे दोस्त के बहुत कहने के बावजूद तीनों दोस्त नहीं माने। तीनों को अपनी-अपनी विद्या का इस्तेमाल करते देख चौथा दोस्त डर गया। उसने अपने सभी मित्रों से कहा, ठीक है, तुम लोग अपने मन की करो, लेकिन मुझे पेड़ पर चढ़ जाने दो। वहीं, अन्य दोस्त अपनी सिद्धियों और विद्याओं के बल से उस शेर को जीवित करने की कोशिश में लग गए। और शेर ज़िंदा हो जाता है। शेर जैसे ही ज़िंदा हुआ वह अपने आसपास तीन ब्राह्मणों को देखते ही उन्हें मार डालता है, जबकि पेड़ पर चढ़ा चौथा दोस्त अपनी समझदारी से बच जाता है।

7 अंतर खोजें



जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951



पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

मेष 	कार्यक्षेत्र में आपका प्रभाव बढ़ेगा, अधिकारी प्रसन्न रहेंगे। व्यापार में नए सौदे मिलने से लाभ होगा। प्रेम जीवन में एक-दूसरे के प्रति सम्मान बढ़ेगा।	तुला 	कार्यस्थल पर प्रभाव बढ़ेगा, नए अवसर मिलेंगे। व्यापार में साझेदारी से बड़ा फायदा होगा। प्रेम जीवन में सामंजस्य बना रहेगा। वित्तीय पक्ष काफी मजबूत रहेगा।
वृषभ 	कार्यस्थल पर संयम बनाए रखें, विवाद टालें। व्यापार में सोच-समझकर पूंजी लगाएं। अनावश्यक खर्चों से बचने की जरूरत है। परिवार के साथ खुशनुमा समय बीतेगा।	वृश्चिक 	कार्यक्षेत्र में प्रतिस्पर्धियों को मात देंगे। व्यापार में प्रॉपर्टी से जुड़े लाभ हो सकते हैं। पारिवारिक जीवन में सुख-शांति रहेगी। अचानक धन लाभ के योग बन रहे हैं।
मिथुन 	कार्यक्षेत्र में तरक्की के नए अवसर प्राप्त होंगे। व्यापार में विवेक से फैसले लें, मुनाफा होगा। दायित्व जीवन में मधुरता बनी रहेगी। आय के नए स्रोत बन सकते हैं।	धनु 	नए काम की जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यापार में प्रगति होगी, योजनाएं फलेंगी। संतान की ओर से खुशी मिलेगी। आय में वृद्धि के संकेत मिल रहे हैं।
कर्क 	नौकरी में सहकर्मियों का सहयोग मिलेगा। व्यापार में सोच-समझकर लिया गया फैसला लाभ देगा। परिवार में मांगलिक कार्यों की चर्चा हो सकती है।	मकर 	काम का दबाव अधिक रहेगा, योजना बनाएं। व्यापार में सावधानी से निर्णय लें। परिवार में बड़ों की राय जरूर लें। अनावश्यक व्यय पर लगाम लगाएं।
सिंह 	करियर में अपनी काबिलियत दिखाने का मौका मिलेगा। व्यापार में बड़ा मुनाफा होने के योग हैं। प्रेम संबंधों में भावनात्मक निकटता बढ़ेगी। आर्थिक मामलों में दिन बेहद शुभ है।	कुम्भ 	बुद्धिमता से कार्यक्षेत्र में सफलता मिलेगी। व्यापार में नए समझौते हो सकते हैं। मित्रों के साथ सुखद समय बीतेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।
कन्या 	कार्यक्षेत्र में दस्तावेज ध्यान से पढ़ें। व्यापार में जोखिमभरे फैसलों से बचें। परिवार में शांति और सामंजस्य रहेगा। आवक और जावक का संतुलन बनाएं।	मीन 	वाणी और व्यवहार से लाभ होगा। व्यापार में लाभ के अवसर मिलेंगे। परिवार में मांगलिक आयोजन की संभावना। बचत के प्रयास सफल रहेंगे। मानसिक शांति बनी रहेगी।



अलविदा नाना पाटेकर

1 जनवरी
1951
8 अक्टूबर
2026

राजनीति से लेकर बालीवुड तक की हस्तियों ने जताया शोक

“ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने नाना पाटेकर के निधन पर दुख जताते हुए लिखा, नाना पाटेकर जैसी तीव्रता, अनोखपन और दमदार मौजूदगी बहुत कम अभिनेताओं में देखने को मिलती है। उन्होंने हर किरदार में अद्भुत विविधता और रचनात्मकता का परिचय दिया और हमें ऐसे पात्र दिए जिन्हें पीढ़ियों तक याद रखा जाएगा। उन्हें उनके बेबाक और स्पष्ट विचारों के लिए भी सराहा जाता था; वे अपनी बात कहने में कभी नहीं हिचकिचाते थे। पीएम मोदी ने आगे लिखा, हिंदी और मराठी सिनेमा में श्री नाना पाटेकर का योगदान बहुत बड़ा था। उनके निधन से एक बड़ी कमी महसूस हो रही है। उनके परिवार, दोस्तों और अनगिनत प्रशंसकों के प्रति मेरी संवेदनाएं। ओम शांति।



“ मशहूर अभिनेता, सशक्त थिएटर कलाकार और संवेदनशील समाजसेवी पद्म श्री नाना पाटेकर जी का निधन कला जगत के लिए एक अपूरणीय क्षति है। अपनी बेहतरीन अदाकारी से उन्होंने भारतीय सिनेमा को समृद्ध किया और सामाजिक सरोकारों के माध्यम से समाज के प्रति अपनी प्रतिबद्धता भी जाहिर की। भगवान श्री राम दिवंगत आत्मा को अपने श्री चरणों में स्थान दें और शोकाकुल परिवार व प्रशंसकों को यह दुख सहने की शक्ति प्रदान करें। - योगी आदित्यनाथ मुख्यमंत्री यूपी

“ भारतीय सिनेमा के महत्वपूर्ण स्तंभ और लोकप्रिय अभिनेता नाना पाटेकर के आकस्मिक निधन का समाचार अत्यंत दुःखद है। ईश्वर दिवंगत आत्मा को शांति प्रदान करें। इस मुश्किल घड़ी में कांग्रेस परिवार की गहरी संवेदनाएं उनके शोक-संतप्त परिजनों एवं प्रशंसकों के साथ हैं। - भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस पार्टी

“ भारतीय फिल्म जगत के दिग्गज अभिनेता नाना पाटेकर के निधन की खबर बेहद चौंकाने वाली और दिल तोड़ने वाली है। मैं उनके प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता हूँ। नाना और मेरे बीच बहुत करीबी और दोस्ताना रिश्ते थे। - नितिन गडकरी केंद्रीय मंत्री

“ मैं शब्दों में बयां नहीं कर सकता कि मैं कितना सदमे में हूँ। ऐसा लग रहा है जैसे किसी ट्रक ने मुझे टक्कर मार दी हो। नाना पाटेकर जी के निधन की खबर सुनकर मैं बेहद दुखी हूँ। वह एक बेहतरीन अभिनेता थे, जिनकी तुलना किसी से नहीं की जा सकती। अपनी अलग शैली और अभिनय के खास अंदाज से उन्होंने लोगों के दिलों में अपनी एक अलग जगह बनाई। ऐसा कोई किरदार नहीं था, जिसे वह निभा न सकें। उन्होंने हर तरह के किरदार में खुद को साबित किया- चाहे वह एक बड़े पर्दे के हीरो का किरदार हो, डरावने विलेन का या फिर अपने शांत अंदाज वाली कॉमेडी का। वह पर्दे के बाहर भी एक हीरो थे। उन्होंने अपनी चैरिटी के जरिए लोगों की भलाई के लिए लगातार काम किया। - रितेश देशमुख अभिनेता

“ दिग्गज अभिनेता के निधन से देश में शोक की लहर है। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी, उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ से लेकर गोवा के मुख्यमंत्री ने नाना पाटेकर को श्रद्धांजलि दी है। - डॉ. प्रमोद सावंत, मुख्यमंत्री गोवा

45 मिनट तक मौत से लड़े, फिर थम गई सांसें

दिग्गज अभिनेता नाना पाटेकर का गुरुवार सुबह 5.20 बजे गोवा स्थित उनके घर पर गंभीर कार्डियक अरेस्ट के बाद निधन हो गया। उन्हें बचाने के लिए 45 मिनट तक लगातार सीपीआर दिया गया, लेकिन उन्हें पुनर्जीवित नहीं किया जा सका। गोवा के मणिपाल अस्पताल के ऑन्कोलॉजी विभाग के प्रमुख डॉ. शेखर सालकर ने बताया कि नाना पाटेकर को उनके घर पर गंभीर कार्डियक अरेस्ट आया था। लगातार 45 मिनट तक सीपीआर देने के बावजूद उनकी हालत नहीं संभली और उनकी मौत हो गई। डॉ. सालकर के मुताबिक, मामले में मेडिको-लीगल केस (एमएलसी) दर्ज किया गया है। अब नाना पाटेकर का पोस्टमार्टम कराया जाएगा। विश्वनाथ पाटेकर, जिन्हें दुनिया नाना पाटेकर के नाम से जानती है,

हिंदी और मराठी सिनेमा के चर्चित अभिनेताओं में शामिल थे। उनका जन्म 1 जनवरी 1951 को महाराष्ट्र के रायगढ़ जिले के मुरुड-जंजीरा में हुआ था। वह सिर्फ अभिनेता ही नहीं, बल्कि फिल्म निर्माता, निर्देशक और लेखक भी रहे। उन्हें भारतीय सिनेमा के बेहतरीन और प्रभावशाली अभिनेताओं में गिना जाता है। नाना पाटेकर ने 1978 में आई फिल्म 'गमन' से हिंदी सिनेमा में कदम रखा। शुरुआती दौर में उन्होंने मराठी और हिंदी फिल्मों में काम किया। 1988 में मीरा नायर की फिल्म 'सलाम बॉम्बे!' में उनके काम को काफी सराहा गया। इसके बाद 1989 की 'परिदा' ने उनके करियर को एक बड़ा मोड़ दिया। इस फिल्म में गैंगस्टर की भूमिका के लिए उन्हें राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार और फिल्मफेयर पुरस्कार मिला।

“ नाना के निधन की खबर सुनकर मुझे बहुत दुख हुआ। वह उन गिने-चुने कलाकारों में से एक थे, जिन्हें आपको अपनी तरफ ध्यान खींचने के लिए ज्यादा कुछ करने की जरूरत नहीं पड़ती थी। उनकी आवाज, उनका अभिनय, उनकी गहराई और हर किरदार में दिखने वाली सच्चाई उन्हें सबसे अलग बनाती थी। वह अपने आप में बिल्कुल अनोखे थे। - अक्षय कुमार अभिनेता

ऐसा लगता है जैसे अपने जीवन का कोई परिचित हिस्सा खो गया हो : संजय शर्मा

आज नाना पाटेकर के जाने की खबर पढ़कर मन बहुत उदास हो गया। किसी कलाकार से हमारा कोई निजी रिश्ता नहीं होता, फिर भी उसके जाने पर ऐसा लगता है जैसे अपने जीवन का कोई परिचित हिस्सा खो गया हो। बरसों तक उसे देखते हुए, उसकी आवाज सुनते हुए, हम उससे एक अनकहा रिश्ता बना लेते हैं। नाना जी के साथ भी यही रिश्ता था, पर्दे पर उनकी आँखें भर आती थीं तो हमारी आँखें भी नम हो जाती थीं, उनके गुस्से में हमें अपना गुस्सा दिखाई देता था और उनकी चुप्पी में वह दर्द सुनाई देता था, जिसे कई बार हम खुद भी शब्द नहीं दे पाते। आज उनकी कोई पुरानी फिल्म देखेंगे तो सब कुछ पहले जैसा होगा, वही चेहरा, वही आवाज, वही संवाद। बस मन में एक कसक रहेगी कि जिस इंसान ने इन किरदारों में अपनी साँसें भरी थीं, वह अब हमारे बीच नहीं है। नाना जी, आपने कितनी बार अनजान दर्शकों को हँसाया, रुलाया और उनके नीतर कुछ जगा दिया। शायद आपको कभी पता भी नहीं चला होगा कि कितने लोगों ने आपके किसी किरदार में खुद को देखा और कितनी ने आपकी आवाज में अपने मन की बात सुनी। आज विदा कहते हुए शब्द कम पड़ रहे हैं। पर्दे पर जब भी आप दिखाई देंगे, दिल कुछ पल के लिए यही मान लेना चाहेगा कि आप यहीं हैं। आपकी याद को मेरा नमन, परिवार और आपके तमाम चाहने वालों के प्रति गहरी संवेदनाएँ। भावभीनी श्रद्धांजलि!



4 पीएम के संपादक ने दी नाना पाटेकर को श्रद्धांजलि

किंग खान की फिल्म में हुई करीना कपूर की एंट्री



शाहरुख खान की फिल्म किंग का इंतजार फैस को बेसब्री से है। मगर इस फिल्म का गाना 'डैडी कूल' और भी ज्यादा खास होने वाला है। खबर है कि इस गाने में बादशाह के साथ करीना कपूर भी दिखाई देंगी। शाहरुख खान और करीना कपूर खान आगामी एक्शन फिल्म किंग के एक महत्वपूर्ण गाने में एक बार फिर साथ नजर आने वाले हैं। रिपोर्ट्स के अनुसार करीना ने डैडी कूल नामक इस गाने में विशेष भूमिका निभाने के लिए हामी भरी है, जिसकी शूटिंग इस महीने के अंत में दक्षिण अफ्रीका में एक भव्य तरीके से होगी। फिल्म किंग का गाना डैडी कूल ऐसा पहला प्रोजेक्ट नहीं है, जिसके लिए शाहरुख और करीना साथ काम कर रहे हों। इससे पहले करीना और शाहरुख अशोका, कभी खुशी कभी गम और

रा.वन जैसी बड़ी फिल्मों में एक साथ काम कर चुके हैं। इसके अलावा करीना शाहरुख की कई फिल्मों में कैमियो या स्पेशल गाना भी कर चुकी हैं। पिंकविला की रिपोर्ट्स के मुताबिक 'डैडी कूल' को इस एक्शन फिल्म के मुख्य गानों में से एक के रूप में प्रस्तुत किया जाना है। प्रोडक्शन शेड्यूल के अनुसार, करीना को दक्षिण अफ्रीका में शाहरुख के साथ अपने हिस्से की शूटिंग के लिए लगभग पांच दिन दिए गए हैं। रिपोर्ट्स के मुताबिक इन दो बॉलीवुड सितारों को एक साथ लाने के अलावा, इस सीक्वेंस में एक बड़ा क्रॉस-कल्चरल सहयोग भी देखने को मिलेगा। इस गाने में एक भारतीय कलाकार एक अंतरराष्ट्रीय कलाकार के साथ नजर आएंगे। प्रोडक्शन टीम ने अभी तक इस अंतरराष्ट्रीय संगीतकार की पहचान गुप्त रखी है।

अब तक दृश्यम-3 का हुआ 229 करोड़ का कलेक्शन

भारतीय बॉक्स ऑफिस पर अजय देवगन की फिल्म दृश्यम 3 का जलवा बरकरार है। इस फिल्म की रिलीज का आज छठा दिन है। फिल्म की कमाई घटी है, मगर इसने आज भी नोट छापे हैं। जानिए द वन और हनुमान अंश की कितनी कमाई हुई है। अजय देवगन की फिल्म दृश्यम 3 ने बॉक्स ऑफिस पर धुआधार शुरुआत की थी। फिल्म ने वीकएंड का भी जमकर फायदा उठाया। वीकडेज में भी फिल्म अच्छी कमाई कर रही है। पहले दिन इस फिल्म ने 62 करोड़ रुपये से खाता खोला। दूसरे दिन इसने 53.50 करोड़ रुपये कमाए। तीसरे दिन इसकी कमाई 61 करोड़ रुपये रही। चौथे ने इसने 21 करोड़ रुपये बटोरे। पांचवें दिन फिल्म का कलेक्शन 19.50 करोड़ रुपये रहा। बुधवार को इसने खबर लिखे जाने तक 12.96 करोड़ रुपये की कमाई की है। इसका टोटल कलेक्शन 229.96 करोड़ रुपये हो गया है। अजय देवगन की फिल्म दृश्यम 3 दुनियाभर में भी अच्छा कलेक्शन कर रही है। भारत में इसका ग्राँस कलेक्शन 275.69 करोड़ रुपये हुआ है। वहीं इसका वर्ल्डवाइड ग्राँस 341.30 करोड़ रुपये हो गया है। फिल्म 350 करोड़ बनने से बस 9 करोड़ रुपये दूर है।

फिर अपराधियों को सजा दिलाने आ रहा सनी देओल का 'इक्का'

सनी देओल की 'इक्का' ने दर्शकों के बीच औसत प्रदर्शन किया था। मगर अब जल्द फिल्म के दूसरे भाग पर भी काम शुरू होने वाला है। इस भाग में सनी देओल फिर वापसी करेंगे। वहीं फिल्म से जुड़े एक अहम अभिनेता इस भाग को हिस्सा नहीं होंगे। 'इक्का' की रिलीज के बाद से ही फिल्म के दूसरे भाग पर काम शुरू हो गया था। इंडिया टुडे की रिपोर्ट के मुताबिक इन दिनों इक्का 2 की स्क्रिप्टिंग पर काम चल रहा है। फिल्म से जुड़े अभिनेता ने बताया, 'इक्का 2 की स्क्रिप्टिंग शुरू हो चुकी है। कहानी में सनी देओल इक्का के किरदार में ही रहेंगे। हालांकि, नए सीजन की कहानी बिल्कुल नई होगी और अक्षय खन्ना दूसरे भाग में नहीं होंगे। इस पर काम अगले साल शुरू होने की उम्मीद है। फिलहाल स्क्रिप्ट और थीम पर काम चल रहा है।' साल 2023 में गदर 2 की रिलीज के बाद से ही सनी देओल के एक्टिंग करियर की दूसरी पारी की शुरुआत हुई है। वहीं इस साल की शुरुआत में आई फिल्म बॉर्डर 2 के बाद से तो अभिनेता के पास कई प्रोजेक्ट्स की लंबी लाइन लगी हुई है। इसमें नितेश तिवारी की रामायण भी शामिल है, जिसमें सनी देओल, हनुमान के



किरदार में नजर आएंगे। इसके अलावा क्राइम थ्रिलर फिल्म एंटनी भी है, जिसमें सनी एक पुलिस अधिकारी के रूप में नजर आएंगे। यह साल अभिनेता अक्षय खन्ना के लिए भी काफी व्यस्त कर देने वाला रहा। पहले 'धुरंधर' फेंचाइजी ने एक्टर के करियर को दोबारा निखार दिया। इसे बाद से वह विभिन्न प्रकार की भूमिकाओं को आजमा रहे हैं। इसके साथ ही वह फिल्म निर्माता प्रशांत वर्मा के सिनेमेटिक यूनिवर्स का हिस्सा भी बने हैं। इसके तहत उनकी अगली फिल्म महाकाली है जिसमें वह शुक्राचार्य की भूमिका में दिखाई देंगे।

लखनऊ में बाढ़ और हुई विकराल

» 10वें दिन भी बढ़ रहा गोमती का जलस्तर

» बैकुंठ धाम और फैजुल्लागंज में हालात गंभीर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। गोमती नदी का जलस्तर लगातार 10वें दिन भी बढ़ने से राजधानी के कई इलाकों में बाढ़ जैसे हालात बने हुए हैं। पलासियो मॉल के आसपास की सड़कें पानी से घिरकर टापू जैसी हो गई हैं। यहां घुटनों तक पानी भरा है। वहीं इकाना स्टेडियम और आपदा प्रबंधन कार्यालय तक भी बाढ़ का पानी पहुंच गया है। बाढ़ का असर आईआईआईटी परिसर तक पहुंच गया है। जलभराव को देखते हुए संस्थान को अगले आदेश तक बंद कर दिया गया है, जबकि परीक्षाएं भी टाल दी गई हैं। बैकुंठ धाम भी पूरी तरह जलमग्न है।

यहां शव रखने के लिए बनाए गए चबूतरों तक पानी में डूब गए हैं। स्थानीय लोगों का आरोप है कि मदद के लिए हेल्पलाइन नंबर पर लगातार फोन किए जाने के बावजूद समय पर सहायता नहीं मिल पा रही है। फैजुल्लागंज में बाढ़ ने हालात और गंभीर

जलभराव से डूबे इकाना व पलासियो मॉल



खाना-पानी नहीं मिलने से नाराजगी

फैजुल्लागंज में प्रभावित लोगों का कहना है कि समय पर खाना और पीने का पानी नहीं पहुंच रहा है। राहत सामग्री और मदद को लेकर लोगों में नाराजगी बढ़ती जा रही है। इसी दौरान राहत पहुंचाने पहुंची NDRF टीम और स्थानीय लोगों के बीच नोकझोंक की स्थिति भी सामने आई। बाढ़ प्रभावित इलाकों में लगातार बढ़ते जलस्तर के बीच अब लोगों की सबसे बड़ी चिंता सुरक्षित निकासी, भोजन, पीने के पानी और राहत सामग्री की है।

कर दिए हैं। स्थानीय लोगों के मुताबिक करीब 40 हजार घरों में पांच से छह फीट तक पानी भर गया है। पानी बढ़ने



के कारण बड़ी संख्या में परिवार घर छोड़कर सुरक्षित स्थानों की ओर जाने को मजबूर हैं। घरों में पानी घुसने से

बाढ़ को लेकर पार्श्व मुकेश सिंह चौहान ने मेयर पर साधा निशाना

लखनऊ के फैजुल्लागंज में आई बाढ़ पर मेयर महोदया की उदासीनता और अन्देखी पर कांग्रेस पार्श्व मुकेश सिंह चौहान ने निशाना साधा है। पार्श्व मुकेश सिंह चौहान ने कहा कि फैजुल्लागंज में पिछले 10 दिन से बाढ़ की भयावह स्थिति बनी है, घरों के भीतर पानी है। लोगों की गृहस्थी पानी में डूबी है। बच्चे, बुजुर्ग और महिलाएं परेशान हैं। हजारों परिवार इस संकट से जूझ रहे हैं। लेकिन मेयर महोदया न लोगों की स्थिति और दर्द को जानने की जरूरत नहीं समझी, सवाल सिर्फ पानी की निकासी का नहीं है, सवाल यह भी है कि फैजुल्लागंज नगर निगम का क्षेत्र है और शहर की मेयर महोदया कहाँ हैं? नगर निगम की जिम्मेदारी सिर्फ सड़क, नाली और सफाई तक सीमित नहीं होती। जब किसी इलाके की बड़ी आबादी लगातार आपदा जैसी स्थिति में फंस जाए, तब शहर के प्रथम नागरिक से जनता स्वाभाविक रूप से उम्मीद करती है कि वह मौके पर पहुंचे, लोगों की सुने और प्रशासन पर दबाव बनाए। चौहान ने कहा कि बाढ़ पीड़ित लोगों को परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है, राहत कब मिलेगी के साथ यह भी सवाल है कि संकट की इस घड़ी में उनके साथ उनकी मेयर महोदया क्यों नहीं खड़ी दिखीं, आखिर राहत के साथ संवेदनशीलता की भी जरूरत है, लेकिन मेयर महोदया ने मौके पर पहुंचकर लोगों का दुख दर्द बाटना मुनासिब नहीं समझा।

घरेलू सामान और जरूरी वस्तुओं के खराब होने से लोगों को भारी नुकसान उठाना पड़ रहा है।

आतंकवादियों की तरह रोका गया विपक्षी सांसदों का दिल्ली मार्च : राउत

» कहा- सांसदों को बंदूक की नोक पर निर्वाचन आयोग के कार्यालय तक जाने से रोका गया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। दिल्ली में विपक्षी दलों के नेताओं के सड़क पर उतरकर प्रदर्शन करने के एक दिन बाद बुधवार को शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) के सांसद संजय राउत ने दावा किया कि सांसदों को बंदूक की नोक पर निर्वाचन आयोग के कार्यालय तक जाने से रोका गया। जैसे मानो वे आतंकवादी हों और महिला सांसदों के साथ बुरा बर्ताव किया गया।



संजय राउत ने पत्रकारों से बातचीत में पूर्व मुख्य निर्वाचन आयुक्त राजीव कुमार पर शिवसेना का चुनाव चिह्न चोरों को सौंपने का आरोप भी लगाया और दावा किया कि उन्होंने राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी (एनसीपी) के मामले में भी ऐसा ही किया था। संजय राउत ने कहा कि विपक्षी दल के सांसदों को मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार से मिलने से रोकने के लिए हजारों जवानों को तैनात किया गया था। उन्होंने कहा कि 275 निहत्थे विपक्षी सांसदों को रोकने के लिए दिल्ली पुलिस और केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सीआरपीएफ) के जवानों को तैनात किया गया था जैसे मानो वे आतंकवादी हों।

आंदोलन को लेकर भाजपा व कांग्रेस में रार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

तिरुवनंतपुरम। भाजपा की केरलम इकाई के अध्यक्ष राजीव चंद्रशेखर ने बृहस्पतिवार को मुख्यमंत्री वी डी सतीशन पर आरोप लगाया कि उनकी सरकार तिरुवनंतपुरम नगर निगम के पार्श्व आर सुगाथन के खिलाफ कार्रवाई के जरिए कानून और मौलिक अधिकारों का उल्लंघन कर रही है और वह 'लोकतंत्र को लेकर फर्जी विरोध प्रदर्शनों' के जरिए केरल के लोगों का ध्यान भटकाने की कोशिश कर रहे हैं। उन्होंने कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ जा रहे विरोध प्रदर्शन को भी 'फर्जी नाटक' करार दिया। चंद्रशेखर ने यह टिप्पणी सतीशन के दिल्ली में मुख्य निर्वाचन आयुक्त के खिलाफ हुए प्रदर्शन में शामिल होने और प्रदर्शन के दौरान राहुल गांधी को हिरासत में लिए जाने की आलोचना करने वाली उनकी सोशल मीडिया पोस्ट के बाद 'एक्स' पर की।

मुख्यमंत्री ने बुधवार को कहा था कि चुनावी प्रक्रिया की सत्यनिष्ठा पर सवाल उठाने



को लेकर गांधी के खिलाफ दर्ज प्राथमिकी 'लोकतांत्रिक असहमति पर हमला' है। उन्होंने यह भी कहा था, 'मतदाता सूचियों में अनियमितताओं के खिलाफ और स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव के लिए लड़ई जारी है। लोकतंत्र को दबाया नहीं जा सकता।' मुख्यमंत्री के बयान का जवाब देते हुए चंद्रशेखर ने 'एक्स' पर लिखा, "मुख्यमंत्री वी डी सतीशन, अपना समय बर्बाद न करें और लोकतंत्र, धर्मनिरपेक्षता तथा संविधान को लेकर अपने फर्जी विरोध

» सीएम फर्जी प्रदर्शनों से जनता को न भटकाएं : चंद्रशेखर
» नेता प्रतिपक्ष को हिरासत में लेना अलोकतांत्रिक : सतीशन

प्रदर्शनों के जरिए मलयालियों का ध्यान भटकाने की कोशिश न करें। आपके प्रशासन पर कानून, न्याय और मौलिक अधिकारों के उल्लंघन के आरोप हैं।' नेमोम से भाजपा विधायक चंद्रशेखर का इशारा भाजपा पार्श्व सुगाथन की ऐहतितायतन हिरासत की ओर था, जिन्हें हाल में केरल उच्च न्यायालय के आदेश के बाद रिहा किया गया था। चंद्रशेखर ने आरोप लगाया कि सुगाथन की हिरासत 'पिनराई विजयन और वी डी सतीशन सरकारों की सोची-समझी और सुनियोजित आपराधिक साजिश' थी, जिसमें उन्होंने केएपीए के सलाहकार बोर्ड, एक जिलाधिकारी और पुलिस का इस्तेमाल किया।

श्रेयस करियर की सर्वश्रेष्ठ टी20 रैंकिंग पर पहुंचे

» गिल वनडे में शीर्ष पर बरकरार, सूर्यवंशी ने भी लगाई लंबी छलांग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

दुबई। भारत के टी20 कप्तान श्रेयस अय्यर बुधवार को खेल के सबसे छोटे प्रारूप की ताजा आईसीसी रैंकिंग में करियर के सर्वश्रेष्ठ सातवें स्थान पर पहुंच गए, जबकि वनडे कप्तान शुभमन गिल ने 50 ओवर की बल्लेबाजी सूची में शीर्ष स्थान बरकरार रखा। गिल ने गुवाहाटी में वेस्टइंडीज के खिलाफ दूसरे मैच में नाबाद 223 रन बनाने के बाद वनडे बल्लेबाजी रैंकिंग में शीर्ष पर अपनी स्थिति मजबूत कर ली। यह वनडे प्रारूप में उनका दूसरा दोहरा शतक था जिसने उन्हें 25 रैंकिंग अंक दिलाए और इस प्रदर्शन से उन्होंने

अपने करियर के सर्वश्रेष्ठ 841 रैंकिंग अंकों की बराबरी की।

वहीं अय्यर को वेस्टइंडीज के खिलाफ की 43 गेंदों पर 10 चौकों और छह छक्कों से सजी नाबाद 102 रन की पारी का फायदा मिला। इस विस्फोटक पारी से अय्यर को 18 पायदान का फायदा हुआ जिससे वह इस प्रारूप में भारत के तीसरे सर्वश्रेष्ठ रैंकिंग बल्लेबाज बन गए हैं। आईसीसी के अनुसार ईशान किशन और अभिषेक शर्मा शीर्ष

दो स्थानों पर बने हुए हैं, जबकि तिलक वर्मा 10वें स्थान पर हैं जिससे भारत के

चार बल्लेबाज शीर्ष 10 में शामिल हो गए हैं। 15 वर्षीय बल्लेबाज वैभव सूर्यवंशी आठ स्थान के फायदे से 46वें स्थान पर पहुंच गए हैं। वेस्टइंडीज के बल्लेबाज शेरफान रदरफोर्ड की तेजतर्रार 56 रन की पारी ने उन्हें 10 पायदान के फायदे से 37वें स्थान पर पहुंचा



हरीश रावत के तेवर पड़े नरम!

» आलाकमान की सख्ती के बाद 9 धन्यवाद यात्राएं स्थगित

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

देहरादून। उत्तराखंड कांग्रेस में पूर्व मुख्यमंत्री और वरिष्ठ नेता हरीश रावत की 'धन्यवाद एवं जनसंवाद यात्रा' को लेकर चल रहा विवाद फिलहाल थमता दिखाई दे रहा है। कांग्रेस आलाकमान की आपत्ति और प्रदेश प्रभारी कुमारी शैलजा की चिट्ठी के बाद हरीश रावत ने अपनी आगे की 9 प्रस्तावित धन्यवाद यात्राएं स्थगित कर दी हैं। हरीश रावत ने सोशल मीडिया पोस्ट के जरिए बताया कि उन्होंने नौ और यात्राओं की योजना बनाई थी और इनके आयोजन की जिम्मेदारी भी सौंप दी गई थी।



हालांकि अब उन्होंने इन यात्राओं को स्थगित करने का फैसला किया है। इससे पहले हरीश रावत ने अपनी यात्रा को लेकर उठे सवालों पर सफाई भी दी थी और कहा था कि उनके कार्यक्रम को गलत समझा गया। दरअसल, हरीश रावत ने उत्तराखंड में 1 अक्टूबर से 'धन्यवाद एवं जनसंवाद यात्रा' शुरू करने का ऐलान किया था। प्रदेश कांग्रेस प्रभारी कुमारी शैलजा ने 1 अक्टूबर को उन्हें पत्र लिखकर यात्रा रोकने को कहा था। प्रदेश प्रभारी कुमारी शैलजा की आपत्ति थी कि इन कार्यक्रमों को लेकर न तो प्रदेश प्रभारी से चर्चा हुई और न ही प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष के साथ समन्वय किया गया। पार्टी नेतृत्व ने चुनावी साल में कांग्रेस संगठन के समानांतर व्यक्तिगत कार्यक्रम चलाने पर भी सवाल उठाए थे। हालांकि शुरुआत में हरीश रावत ने आलाकमान की आपत्ति के बावजूद अपनी यात्रा जारी रखी। 5 अक्टूबर को उन्होंने जसपुर से हल्द्वानी तक यात्रा शुरू की। इसके बाद रामनगर में उनके समर्थकों ने जोरदार स्वागत किया। इसी दौरान कांग्रेस संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने हरीश रावत से मुलाकात की और साफ संदेश दिया कि उत्तराखंड में चुनावी अभियान सभी नेताओं को साथ लेकर, कांग्रेस के बैनर तले और संगठन की तय योजना के मुताबिक चलाया जाएगा।

कोहली तीसरे स्थान पर खिसके

पूर्व कप्तान विराट कोहली दूसरे से तीसरे स्थान पर खिसक गए हैं। वेस्टइंडीज के खिलाफ तीसरे वनडे में शानदार शतक के बाद केएल राहुल को सात पायदान का फायदा हुआ जिससे वह 10वें स्थान से शीर्ष 10 में वापस आ गए हैं। भारत के बाएं हाथ के स्पिनर अक्षर पटेल 16 पायदान ऊपर चढ़कर सातवें स्थान पर पहुंच गए।

दिया, जबकि पाकिस्तान के हसन नवाज (62 पायदान के फायदे से 48वें स्थान पर) एशियाई खेलों के बाद सूची में ऊपर बढ़े हैं। एशियाई खेलों के सेमीफाइनल और फाइनल में अब्बार अहमद (29 रन देकर कोई विकेट नहीं और 29 रन देकर एक विकेट) के आंकड़े उन्हें गेंदबाजों में शीर्ष स्थान बरकरार रखने के लिए काफी नहीं थे। लेग स्पिनर राशिद खान आठवीं बार शीर्ष पर लौटे हैं।

ईसीआईएनईटी की खामियों पर सियासी बवाल

» कांग्रेस समेत पूरे विपक्ष ने उठाए का सवाल

» भाजपा मुख्यालय से वोटर लिस्ट कंट्रोल करने का आरोप

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। ईसीआईएनईटी ऐप को कांग्रेस व भाजपा फिर आमने सामने आ गए हैं। कांग्रेस महासचिव जयराम रमेश ने ईसीआईएनईटी ऐप में सुरक्षा खामियों को लेकर इसीआईऔर बीजेपी पर निशाना साधा। उन्होंने आरोप लगाया कि इसे बीजेपी मुख्यालय से वोटर लिस्ट में नाम जोड़ने और हटाने की प्रक्रिया नियंत्रित करने के लिए बनाया गया था। वहीं आंतरिक मतभेदों पर चुनाव आयोग ने कहा कि उसके सभी फैसले कानूनी प्रक्रिया के तहत वैध हैं।



कांग्रेस ने गुरुवार को ईसीआईएनईटी एप्लिकेशन में कथित कमियों को लेकर

जयराम रमेश ने एक्स पर एक मीडिया रिपोर्ट का स्क्रीनशॉट किया शेयर

कांग्रेस के कन्सुलिकेशन इंजार्ज और महासचिव जयराम रमेश ने एक्स पर एक मीडिया रिपोर्ट का स्क्रीनशॉट शेयर किया। इस रिपोर्ट में एक सिक्वोरिटी रिसर्चर के हवाले से कहा गया है कि उन्होंने जुलाई में ही भारत के चुनाव आयोग - इसीआई और देश की साइबर-सिक्वोरिटी एजेंसी को आयोग की वोटर-सर्विसेज वेबसाइट और ईसीआईएनईटी ऐप में मौजूद कमियों के बारे में चेतावनी दी थी। एक्स पर अपनी पोस्ट में रमेश ने कहा कि आज सुबह एक प्रमुख अखबार ने रिपोर्ट दी है कि 8 जुलाई, 2026 को एक सिक्वोरिटी रिसर्चर ने ईसीआईएनईटी में कई कमियों के बारे में चुनाव आयोग का ध्यान आकर्षित किया था। लेकिन उनकी कई चिंताओं में से सिर्फ एक पर 6 अक्टूबर, 2026 को ध्यान दिया गया, जब ईसीआई चारों तरफ से आलोचना और हमलों का सामना कर रहा था। रमेश ने आरोप लगाया कि यह बात बिल्कुल साफ़ हो रही है कि ईसीआईएनईटी को नई दिल्ली में भगपा हेडक्वार्टर से ही सभी तरह के नाम हटाने या जोड़ने के काम को सेंट्रलाइज़ करने के लिए बनाया गया था।

कांग्रेस नेता ने कहा कि दिलचस्प बात यह है कि यह रिसर्चर वही युवा है जिसने कुछ महीने पहले सीबीएसई के एनईईटी सिस्टम की पोल खोल दी थी, जिसकी वजह से मंत्री प्रधान का भविष्य तय हो गया था। अब प्रधानमंत्री की बारी है। रमेश की यह टिप्पणी उस विवाद के बीच आई है जो द इंडियन एक्सप्रेस की उस रिपोर्ट के बाद शुरू हुआ, जिसमें बताया गया था कि चुनाव आयुक्त सुखबीर सिंह संधू और विवेक जोशी ने पिछले 10 महीनों में कम से कम 14 बार उन फैसलों और आदेशों पर आधिकारिक तौर पर आपत्ति जताई थी, जो ज्यादातर स्पेशल इंटेलिजेंस रिजिजन (विशेष गहन समीक्षा) प्रक्रिया से जुड़े थे। अपने दो आयुक्तों द्वारा उठाए गए सवालों के कारण आलोचनाओं का सामना कर रहे चुनाव आयोग ने कहा है कि किसी भी संस्था में अलग-अलग राय और विचार-विमर्श होना सामान्य बात है, और आयोग के सभी आदेशों को पूरी कानूनी मान्यता प्राप्त है तथा वे स्थापित कानूनी प्रक्रियाओं के अनुसार ही जारी किए जाते हैं।

सीबीएसई के एनईईटी सिस्टम की पोल खोलने वाले युवा ने ही खोला राज

कांग्रेस नेता ने कहा कि दिलचस्प बात यह है कि यह रिसर्चर वही युवा है जिसने कुछ महीने पहले सीबीएसई के एनईईटी सिस्टम की पोल खोल दी थी, जिसकी वजह से मंत्री प्रधान का भविष्य तय हो गया था। अब प्रधानमंत्री की बारी है। रमेश की यह टिप्पणी उस विवाद के बीच आई है जो द इंडियन एक्सप्रेस की उस रिपोर्ट के बाद शुरू हुआ, जिसमें बताया गया था कि चुनाव आयुक्त सुखबीर सिंह संधू और विवेक जोशी ने पिछले 10 महीनों में कम से कम 14 बार उन फैसलों और आदेशों पर आधिकारिक तौर पर आपत्ति जताई थी, जो ज्यादातर स्पेशल इंटेलिजेंस रिजिजन (विशेष गहन समीक्षा) प्रक्रिया से जुड़े थे। अपने दो आयुक्तों द्वारा उठाए गए सवालों के कारण आलोचनाओं का सामना कर रहे चुनाव आयोग ने कहा है कि किसी भी संस्था में अलग-अलग राय और विचार-विमर्श होना सामान्य बात है, और आयोग के सभी आदेशों को पूरी कानूनी मान्यता प्राप्त है तथा वे स्थापित कानूनी प्रक्रियाओं के अनुसार ही जारी किए जाते हैं।

भाजपा पर निशाना साधा और कहा कि यह बात बिल्कुल साफ़ होती जा रही है

कि इसे नई दिल्ली में सत्ताधारी पार्टी के मुख्यालय से ही सभी तरह के नाम हटाने

और जोड़ने की प्रक्रिया को केंद्रित करने के मकसद से बनाया गया था।

शॉर्ट सर्किट से लगी आग, दो सिलिंडर फटे, मां-बेटी की मौत

» बागपत में किराने की दुकान में हुआ हादसा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बागपत। खेकड़ा कस्बे के बाजार चौकी के निकट एक दो मंजिला मकान के ग्राउंड फ्लोर पर स्थित किराना की दुकान में शॉर्ट सर्किट से भीषण आग लग गई। इस घटना में दो सिलिंडर फट गए, जिससे भगदड़ मच गई। आग से दम घुटने के कारण दुकानदार की पुत्रवधू स्वाति जैन और पौत्री अनन्या जैन की मौत हो गई।

उनका बेटा अंकुर जैन और एक श्रमिक जाहिद झुलस गए। घटना गुरुवार सुबह करीब आठ बजे हुई। उस समय दुकानदार विनय जैन और उनकी पत्नी पुष्पा जैन घर से बाहर थे। दुकान पर अंकुर जैन और जाहिद मौजूद थे, जबकि स्वाति और अनन्या प्रथम तल पर थीं। अचानक आग लगने से



अंकुर और जाहिद बाहर निकलने में सफल रहे, लेकिन स्वाति और अनन्या नहीं बच सकीं। अग्निशमन विभाग की टीम ने आग पर काबू पाया और रेस्क्यू कर स्वाति और अनन्या को बाहर निकाला, लेकिन तब तक उनकी मृत्यु हो चुकी थी। माना जा रहा है कि दम घुटने से उनकी जान गई।

एसडीएम सुरभि शर्मा ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू की। डीएम दिव्यांशु पटेल और एसपी प्रवीण सिंह चौहान ने भी घटना स्थल का मुआयना किया। इस घटना से कस्बे में शोक का माहौल है। व्यापारी पीड़ित परिवार को सांत्वना दे रहे हैं और प्रशासन से मदद की मांग कर रहे हैं।

केंद्र सरकार को सुप्रीम कोर्ट की नोटिस

कहा- फार्मा कंपनियों की गलत मार्केटिंग प्रैक्टिस रोकें, कमेटी बनाने का आदेश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को केंद्र सरकार को एक कमेटी बनाने का निर्देश दिया। यह कमेटी सुझावों पर विचार करेगी और सरकार को सिफारिशें देगी ताकि यह पक्का किया जा सके कि फार्मास्युटिकल कंपनियां अनैतिक मार्केटिंग तरीकों का इस्तेमाल न करें। जस्टिस विक्रम नाथ और सदीप मेहता की बेंच ने एक याचिका पर यह आदेश दिया।

याचिका में मांग की गई थी कि जब तक कोई असरदार कानून नहीं बन जाता, तब तक सुप्रीम कोर्ट दवा कंपनियों की अनैतिक मार्केटिंग प्रैक्टिस को कंट्रोल और रेगुलेट करने के लिए गाइडलाइंस तय करे। 8 सितंबर को केंद्र सरकार

ने सुप्रीम कोर्ट को बताया था कि वह एक तीन-सदस्यीय पैनल बना रही है। यह पैनल एक कानूनी ढांचा बनाने का सुझाव देगा ताकि यह पक्का किया जा सके कि दवा कंपनियां अनैतिक काम न करें। 8 सितंबर को मामले की सुनवाई के दौरान, केंद्र सरकार ने दो महीने का समय मांगा था ताकि समिति अपनी रिपोर्ट सौंप सके और उसे मंजूरी के लिए अदालत के सामने रखा जा सके। केंद्र सरकार इस बात पर सहमत थी कि यह पक्का करने के लिए सिस्टम को मजबूत करने की जरूरत है कि दवा कंपनियां किसी भी तरह के अनैतिक काम न करें। केंद्र सरकार ने कहा, इस मामले पर विस्तार से चर्चा हुई है और संभावित समाधान खोजने के लिए तीन

सदस्यों की एक समिति बनाने का फैसला किया गया है। समिति से कहा गया है कि वह इस बात पर अपनी रिपोर्ट दे कि क्या दवा कंपनियां ऐसी अनैतिक गतिविधियों में शामिल हो सकती हैं और अगर हां तो उन्हें रोकने के लिए क्या कानूनी ढांचा बनाया जा सकता है। सरकार ने यह भी कहा कि जब तक रिपोर्ट नहीं मिल जाती और उस पर कोई फैसला नहीं हो जाता तब तक यूनिफॉर्म कोड ऑफ फार्मास्युटिकल मार्केटिंग प्रैक्टिसेज, 2024 ही इस क्षेत्र के लिए लागू रहेगा। बेंच ने अपना आदेश सुनाते हुए कहा, हमने भारत सरकार को एक कमेटी बनाने का निर्देश दिया है। यह कमेटी सुझावों और विचारों पर विचार करेगी और उसके बाद भारत सरकार को अपनी सिफारिशें सौंपेगी। बेंच ने केंद्र सरकार के अनुपालन हलफनामे पर विचार करने के लिए मामले की अगली सुनवाई 29 जनवरी तय की।

महाकुंभ की डॉक्यूमेंट्री के नाम पर सात करोड़ से अधिक का गबन

» मुख्य आरोपी को मुंबई के अंधेरी से किया गया गिरफ्तार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। महाकुंभ-2025 पर डॉक्यूमेंट्री बनाने के नाम पर करोड़ों रुपये की धोखाधड़ी करने के मामले में ईओडब्ल्यू ने मुख्य आरोपी इंद्रजीत नट्टोजी को मुंबई से गिरफ्तार किया है। आरोपी को छह अक्टूबर को मुंबई के अंधेरी वेस्ट स्थित वरसोवा थाना क्षेत्र से पकड़ा गया। वह घटना के बाद से फरार चल रहा था।

ईओडब्ल्यू के मुताबिक, वादिनी पुनीत सिक्का, निदेशक मैसर्स आईक्यू ने डॉक्यूमेंट्री निर्माण के लिए दो जनवरी 2025 को मैसर्स आईएनके पिक्चर्स और एमकोड वेंचर्स एलएलपी के साथ अनुबंध किया था। परियोजना के लिए जीएसटी समेत 5.60 करोड़ रुपये से अधिक का भुगतान किया गया था। आरोप है कि आरोपियों ने कूटरचित बिल, फर्जी अनुबंध और भ्रामक दस्तावेजों के जरिये रकम का दुरुपयोग किया और डॉक्यूमेंट्री भी तैयार नहीं की।

जांच में परियोजना में कर्मचारियों के भोजन और कैटरिंग के नाम पर करीब 75



लाख रुपये के फर्जी हस्तलिखित बिल लगाकर भुगतान लेने की बात सामने आई। काम पूरा नहीं करने की धमकी देकर करीब 20 लाख रुपये की जबरन वसूली और शूटिंग व स्टूडियो किराये के नाम पर अतिरिक्त रकम मांगने के आरोप भी हैं।

ईओडब्ल्यू के मुताबिक छह आरोपियों पर आपराधिक षड्यंत्र, धोखाधड़ी, आपराधिक विश्वासघात, जबरन वसूली, धमकी और 50 टीबी से अधिक फुटेज चोरी कर सात करोड़ रुपये से अधिक के गबन का आरोप है। अन्य आरोपियों की तलाश जारी है।

मुरादाबाद : गेस्ट हाउस बना आग का गोला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुरादाबाद। देर रात रेलवे स्टेशन के सामने उस समय अफरा-तफरी मच गई, जब गेस्ट हाउस में अचानक भीषण आग लग गई। रेलवे स्टेशन के गेट नंबर-2 के सामने स्थित गेस्ट हाउस से उठती आग की ऊंची लपटों और धुएं को देखकर आसपास के इलाके में हड़कंप मच गया। शुरुआती जानकारी के मुताबिक, आग की शुरुआत शॉर्ट सर्किट से हुई और देखते ही देखते पास के दूसरे गेस्ट हाउस तक फैल गई।

घटना मुरादाबाद रेलवे स्टेशन के गेट नंबर-2 के सामने की है। देर रात अचानक एक गेस्ट हाउस के निचले हिस्से में आग भड़क उठी। शुरुआती जांच में शॉर्ट सर्किट को आग लगने की संभावित वजह बताया गया है। निचले हिस्से में लकड़ी और प्लाईवुड से बने ढांचे होने के कारण आग तेजी से फैल गई और देखते ही देखते ऊपर के हिस्से को भी अपनी चपेट में ले लिया।

स्थानीय रिपोर्टों के अनुसार, आग पहले एक गेस्ट हाउस में लगी और कुछ ही समय में बगल स्थित दूसरे गेस्ट हाउस तक पहुंच गई। इस दौरान दोनों इमारतों से आग की तेज लपटें निकलने लगीं। आसपास मौजूद लोगों में दहशत फैल गई और लोग सुरक्षित स्थानों की ओर भागने लगे।

आग लगने के समय गेस्ट हाउस में यात्री ठहरे हुए थे। आग और धुआं बढ़ता देखकर



दमकल की कई गाड़ियां मौके पर पहुंचीं

घटना की सूचना मिलते ही दमकल विभाग की टीमें मौके पर पहुंचीं। आग की गंभीरता को देखते हुए अतिरिक्त दमकल गाड़ियों को भी बुलाया गया। रिपोर्टों के अनुसार, करीब डेढ़ से दो घंटे की मशकत के बाद आग पर काबू पाया जा सका। दमकल कर्मियों ने आसपास की इमारतों और दुकानों तक आग को फैलने से रोकने के लिए भी प्रयास किया। अधिकारियों के मुताबिक, समय रहते आग पर नियंत्रण पा लिया गया, जिससे एक बड़े हादसे को टाला जा सका।

लोगों को बाहर निकाला गया। अलग-अलग स्थानीय रिपोर्टों में वहां मौजूद लोगों की संख्या अलग-अलग बताई गई है, लेकिन सभी रिपोर्टों में यह बात सामने आई है कि लोग समय रहते बाहर निकल गए और कोई जनहानि नहीं हुई। आग को

आसपास की दुकानों में भी मची अफरा-तफरी

गेस्ट हाउस में लगी आग का असर आसपास के व्यावसायिक इलाके में भी देखने को मिला। रेलवे स्टेशन के सामने बड़ी संख्या में दुकानें और होटल-रेस्टोरेंट मौजूद हैं। आग की लपटें देखकर दुकानदारों और वहां मौजूद लोगों में दहशत फैल गई। कुछ रिपोर्टों के मुताबिक, आसपास के दुकानदारों ने एहतियात के तौर पर अपने प्रतिष्ठान बंद किए और ज्वलनशील सामान को सुरक्षित स्थानों पर हटाया। आग बुझाने के दौरान पुलिस ने इलाके में लोगों की आवाजाही नियंत्रित की। फिलहाल आग पर पूरी तरह काबू पा लिया गया है और पुलिस तथा दमकल विभाग की टीमें घटना से जुड़े तथ्यों की पड़ताल कर रही हैं। आग कैसे लगी, कितनी संपत्ति का नुकसान हुआ और सुरक्षा मानकों का कितना पालन किया जा रहा था इन सभी बिंदुओं पर जांच के बाद स्थिति और स्पष्ट होगी।

भयावहता को देखते हुए आसपास की दुकानों और प्रतिष्ठानों को भी खाली कराया गया। रेलवे स्टेशन के सामने का इलाका काफी व्यस्त होने के कारण पुलिस और प्रशासन के सामने भीड़ और ट्रैफिक को नियंत्रित करने की चुनौती रही।